मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान
जुलाई
-९२

कृष्ण जन्माष्टमी—(२१-८-९२)

गोपाल सुन्दरी साधना प्रयोग

कृष्ण जन्माष्टमी नवरात्रि, दीपावली की ही भांति सिद्ध तांत्रोक्त मुहूर्त है, स्वयं श्री कृष्ण तंत्र के अवतार योगेश्वर माने गये हैं, जीवन की विशेष शक्तियों के विकास के लिए कृष्ण की पूजा एवं साधना आवश्यक है। इस वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी २१ अगस्त ९२ शुक्रवार को है। साधकों हेतु दो विशेष प्रयोग दिये जा रहे हैं—

१-गोपाल सुन्दरी तन्त्र

इस तन्त्र की रचना महर्षि शुकदेव द्वारा की गयी जो कि व्यास जी के पुत्र थे। कामना पूर्ति हेतु यह श्रेष्ठ प्रयोग है, यह प्रयोग ऐश्वर्य वृद्धि, भोग प्रदायक कामदेव शक्ति का तन्त्र प्रयोग है।

कृष्ण जन्माष्टमी के सभी प्रयोग स्त्री, पुरुष कोई भी सम्पन्न कर सकता है, कामनाओं पर स्त्री, पुरुष दोनों का समान अधिकार है। जिस प्रकार पुरुषों की कामना जीवन में उन्नति ऐश्वर्य, कार्यों में सफलता, श्रेष्ठ व्यक्तित्व की रहती है, उसी प्रकार स्त्रियों की कामना श्रेष्ठ पति, सुन्दरता, अनुकूल गृहस्थी, घर में शान्ति, श्रेष्ठ सन्तान, सौन्दर्य से सम्बन्धित रहती है। अतः यह प्रयोग स्त्री, पुरुष दोनों को ही सम्पन्न करना चाहिए।

इस विशेष तन्त्र के ऋषि विधात्रा तथा आनन्द भैरव दो ऋषि हैं, और इसमें बीज मन्त्र मूल रूप से काम बीज है। इस साधना में मुख्य रूप से **कृष्ण का सुन्दर चित्र, आनन्द भैरव चक्र, विधात्रा तन्त्र पात्र** का प्रयोग आवश्यक है। कृष्ण जन्माष्टमी के दिन साधक, साधिका अर्द्ध रात्रि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठ कर यह साधना प्रारम्भ करें। कमरे में वातावरण सुगन्धित होना चाहिए। सामने एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर तीन ढेरी सरसों की, तीन ढेरी तिल की तथा एक ढेरी चावल की बनाएं प्रत्येक पर एक-एक सुपारी रखें, कांसे के पात्र में केसर के मध्य में "क्लीं" बीज मन्त्र लिख कर उसके एक ओर **आनन्द भैरव चक्र** तथा दूसरी ओर **विधात्रा तन्त्र पात्र** स्थापिर करें, दोनों के मध्य में एक फल स्थापित करें। अब एक पात्र में जल लेकर संकल्प करें और विभूति पंजर न्यास सम्पन्न करें, विभूति पंजर न्यास में जल को अपने शरीर के सभी अंगों को स्पर्श करना है, यह जल सर्वप्रथम बैठने के स्थान से प्रारम्भ कर सिर के मध्य तक क्रमशः स्पर्श करना है। अब साधक अपने सामने स्थित सात ढेरियों पर जो सुपारी रखी है उसे अपने सिर पर घुमा कर कृष्ण चित्र के हृदय भाग पर स्पर्श करा कर उस स्थान पर पुनः रख दें। यह कार्य करते समय साधक को अपनी विशेष कामना पूर्ति की प्रार्थना निरन्तर करते रहना चाहिए।

अब 'आनन्द भैरव चक्र' तथा 'विधात्रा तन्त्र पात्र' की पूजा करनी है, यह पूजा केवल चन्दन से ही सम्पन्न की जाती है तथा दोनों पर पुष्प का अर्पण करें। अब जो नीचे मन्त्र लिखा है उसका १०८ बार जप करें—

॥ ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा ॥

इस मन्त्र जप में साधक सर्वप्रथम **आनन्द भैरव चक्र** पुष्प सहित अपने हाथ में लें और एक बार मन्त्र बोल कर अपने सिर पर फेरें, इस प्रकार यह क्रम १०८ बार होगा। तत्पश्चात् **विधात्रा तन्त्र पात्र** को अपने हाथ में लेकर १०८ बार सिर पर फेरते हुए मन्त्र जप करें। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण की आरती सम्पन्न करें और पूजा में रखा हुआ फल स्वयं पूर्ण रूप से ग्रहण करें।

वर्ष-१२

अंक-७

जुलाई-१९९२

* * * * * * * * * * * * *
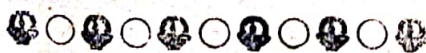
: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और

भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ गुरुर्वे गुरौः स प्राण आत्म ब्रह्माण्डं वै प्रचः ।।

पूज्य गुरुदेव ही जीवन के आधार हैं. पथ-प्रदर्शक हैं, अन्धकार में भी रास्ता दिखाने वाले हैं, मेरे प्राणों में रच-पच जांय, जिससे मैं उनके साथ ही पूरे ब्रह्माण्ड में एकाकार हो सकूं ।

बहुत हो गया तर्क-वितर्क

अब तो

केवल श्रद्धा और भक्ति से ही चलना है

मनुष्य को जो पांच इन्द्रियां प्राप्त हैं उन सबका नियन्त्रण मस्तिष्क को सौंपा गया, मस्तिष्क ही वह केन्द्र बिन्दु है जो तुम्हारे स्वभाव को, उत्तेजना को, उदासीनता को, सुख को, प्रसन्नता को, पीड़ा को नियन्त्रित करता है। आंसू नेत्र से भले ही प्रवाहित होते हों लेकिन जब विचार मस्तिष्क में उत्पन्न होता है तो नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगती है।

इस मस्तिष्क ने बड़े-बड़े काम किये, परमाणु बम तक का आविष्कार कर लिया, पूरे विश्व को नष्ट करने की योजना बना ली, तरह-तरह के केमिकल उत्पादनों का आविष्कार कर दिया, शरीर की पीड़ाओं को दूर करने के लिए नई-नई मशीनें बना ली, अभी कुछ वर्ष पहले एक नई मशीन ईजाद हुई जिसका नामकरण किया गया—एम०आर०ई० "चुम्बकीय संवहन" बना ली। इस मशीन में मनुष्य को लिटा दिया जाता है और उसके शरीर के किसी भी भाग में कोई गड़बड़ी हो, चाहे पेट का अल्सर हो अथवा हृदय का वाल खराब हो, किसी हड्डी में छेद हो अथवा लीवर खराब हो सारा का सारा चित्र सामने और डॉक्टर लोग इसी के अनुरूप ईलाज कर दिया करते हैं कहीं कोई झंझट नहीं।

अभी बम्बई में एक सज्जन मुझसे मिलने आये और बोले—गुरुदेव ! आपका बहुत नाम सुना है, मैं बहुत परेशान और दुखी हूं जिससे मुझे रात को नींद नहीं आती, अभी-अभी मैंने अमेरिका से नया "वाटर बेड" मंगाया है जिसमें सोते हैं तो ऐसा अनुभव होता है कि मानो जल धारा के ऊपर सोये हों, एक लाख के ऊपर खर्च आ गया है लेकिन फिर भी नींद नहीं आती। तब मैंने कहा—भाई व्यापार में कुछ परेशानी होगी, वे बोले कि नहीं गुरुदेव अपने विरोधियों को तो मैंने इस तरह से चालबाजी करके नष्ट कर दिया है कि मेरा जो उत्पादन है उसे बनाने की

उनमें हिम्मत ही नहीं है। दिल्ली में नेताओं से मेरी बड़ी जान पहिचान है, इम्पोर्ट एक्सपोर्ट के लाइसेन्स मुझे प्राप्त हैं और परिवार में भी मुझे कोई परेशानी नहीं है, सारी मेडिकल जांच भी मैंने करा ली है शरीर के किसी अंग में कोई दोष नहीं है। कुछ उपाय आप ही कीजिए नहीं तो इस तरह से तो मैं मर जाऊंगा!

प्रिय शिष्यों! मशीनें बन गई, मशीनों को चलाने के लिए जानकार हो गये और तो और कहते हैं कि हम मस्तिष्क का चित्र खींच लेते हैं, फिर क्या बात है कि पीड़ाएं बढ़ती जा रही हैं, लोग दौड़ रहे हैं कि बस यह मिल जाये वह मिल जाये फिर भी सन्तोष नहीं, सुख नहीं, शान्ति नहीं। कोई भी कार्य करते हैं तो तर्क की कसौटी पर कस कर करते हैं। अन्तरिक्ष में उपग्रह भेजते हैं, टेलीवीजन पर नये-नये कार्यक्रम दिखाते हैं, सूरज और चांद की गतियों को परखते हैं और उन पर अनुसधान करते हैं, लेकिन एक विषय पर अनुसधान नहीं होता और वह है "आनन्द"।

अभी कुछ दिन पहले ब्राजील की राजधानी **रियो-डी-जेनेरा** में एक बड़ा सम्मेलन हुआ, नाम दिया गया **'पृथ्वी सम्मेलन'**। करीब १६० देशों के राष्ट्राध्यक्ष वहां पहुंचे, बड़े ही लम्बे-चौडे भाषण हुए कि पृथ्वी को बचाना है, बड़ा ही प्रदूषण फैल रहा है, महासागरों का जल स्तर बढ़ रहा है, सूर्य की तीव्र गर्मी को रोकने के लिए जो पृथ्वी के चारों ओर ओजोन परत है वह दिन प्रतिदिन पतली होती जा रही है, बड़ा वाद-विवाद हुआ, बड़े-बड़े तथाकथित पर्यावरण शास्त्रियों ने भाषण दिये। मैं कहता हूं कि इन सबको मानवता के लिए इतने बड़े धोखे के लिए सजा कठोर से कठोर देनी चाहिए, जो एक शान्ति थी पृथ्वी पर, हवा में जो एक सुगन्ध थी, प्रकृति का एक अनुपम सौन्दर्य था उसे तो नष्ट कर दिया, नष्ट करने में योगदान दिया और अब इसे बचाने की बात कर रहे हो, पहले अपने गिरहबान में झांक कर तो देखो कि तुम्हारी गलतियां कितनी हैं।

लेकिन प्रिय शिष्यों! अपने भीतर झांक कर कोई नहीं देखता, अपने आपसे, अपने भीतर के कोलाहल से डरते हो। भीतर से जो आवाज उठती है उसे दबा देना बड़ा मुश्किल है, इसके लिए मित्रों के साथ बैठ कर गप्पबाजी करते हो, शाम को टेलीवीजन चला कर बैठ जाते हो, और जब तक नींद नहीं आती यह क्रिया-कलाप चलता रहता है, सुबह उठ कर फिर वही दैनिक दिनचर्या। क्या इस भागम-भाग का कोई अन्त है, किस से भाग रहे हो, क्या अपने आपसे भाग कर कहीं जा सकते हो? कदापि नहीं।

ईश्वर ने, परमात्मा ने जब यह शरीर वरदान स्वरूप तुम्हें दिया तो सारी व्यवस्था इसमें बनाकर दी है, यह शरीर एक आत्मिक सुख का केन्द्र है। दूषित भाव भी जगा सकते हो, अपने भीतर शिवत्व भी जगा सकते हो। यह शरीर तो कुण्डलिनी जागरण का केन्द्र है, गुदा से लगा कर मस्तिष्क के केन्द्र बिन्दु तक जो सात चक्र हैं क्या उनके महत्व को जानते हो? क्या कभी आधे घण्टे भी शान्त व विचार शून्य होकर ध्यान में बैठे हो? यदि ध्यान में भी मन कार्यालय में, पत्नी में, बच्चों की फीस के बारे में, शत्रुओं के बारे में, मित्रों के बारे में दौड़ेगा तो कैसे कह सकते हो कि तुम्हारा शरीर स्वस्थ है।

मैं नहीं कहता कि शरीर पर नियन्त्रण रखो, जब तुम अपने हाथ-पैरों को अपने अनुसार चला सकते हो तो क्यों नहीं मस्तिष्क को अपने अनुसार चलाओ, वर्जनाओं से तथाकथित सारे शास्त्र भरे पड़े हैं कि यह मत करो वह मत करो, बचपन से ही सारी बातें नकारात्मक रूप से सिखाई जाती हैं, ज्यादा मत खेलो, ऐसे मित्रों के साथ न बैठो, पिक्चर मत देखो। सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया ही नहीं जाता, बच्चा बड़ी ही तर्क बुद्धि वाला होता है

और उसे जब इस प्रकार के वर्जनाओं से भर दिया जाता है तो वह बड़ा होकर अविश्वासी हो जाता है, हर कार्य में तर्क ढूंढ़ता है, आखिर ऐसा क्यों होता है ?

मैंने कुछ निश्चय किये हैं, उस सम्बन्ध में आज मैं स्पष्ट कर देना चाहूंगा कि मेरे पास अब तर्क-वितर्क के लिए कोई जगह नहीं है, क्यों मैं बार-बार तुम्हें समझाऊं, तुम्हारे तर्कों में अपना समय गंवाऊं, मैं तो स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मेरे पास देने के लिए एक विश्वास है और मुझे केवल श्रद्धा और भक्ति की आवश्यकता है। मेरे पास आकर, मेरे पास बैठ कर, मुझे सुन कर यदि तुम्हारे भीतर एक शान्ति का भाव उठता है, अश्रु धारा बहती है तो मेरे पास अपने प्रिय शिष्यों के लिए जगह ही जगह है। जिस प्रकार मां अपने बच्चे के सिर पर हाथ फेरती है और बच्चा उसकी गोद में सो जाता है, वहां वह अपने आपको पूर्ण सुरक्षित अनुभव करता है, जिस प्रकार वहां तुम्हारे विज्ञान का तर्क नहीं चलता कि ऐसा क्यों होता है ? भावों के संवेग को नापने का कोई मीटर अभी तक नहीं बन पाया है और न ही भविष्य में कभी बन पायेगा। यह भाव ही तुम्हें तुम्हारे 'स्व' का ज्ञान करा सकते हैं। यदि कोई मुझे आकर कहे कि 'मुझे शिव के दर्शन कराओ मां जगदम्बा को प्रस्तुत करो' तो मैं अपने हाथ ही जोड़ूंगा, क्योंकि यह तो जब तुम्हारे भीतर की मैल दूर होगी, तुम अपने भीतर के आवरण को श्रद्धा, भक्ति और साधना से चमकाओगे तो ये अनुभूतियां स्वतः ही प्रकट होने लग जाएंगी, अनुभूतियों के जागरण के लिए कोई सीधा सरल मार्ग नहीं है, इसके लिए तो एक शुद्धता का निर्माण तुम्हें स्वयं करना पड़ेगा।

क्यों सुस्त होती जा रही हैं तुम्हारी आन्तरिक शक्तियां क्यों उस पर भूसा भर दिया है तुमने तर्क-वितर्क का ? क्यों अपने आपको रोज-रोज मारने का प्रयास करते हो ? क्यों तुम्हें रोज-रोज परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है ? भीतर जो विष वृक्ष उगा रखे हैं उसमें तर्क रूपी विष देकर और अधिक बढ़ाते हो, इन्हें तो केवल श्रद्धा एवं साधना की कुल्हाड़ी द्वारा जड़ मूल से काटा जा सकता है और जब मेरे पास आकर ये भीतर के विष वृक्ष दूर हो जाएं तो फिर उन्हें पनपने का मौका मत दो।

एक शान्त अहर्निश भाव जाग्रत करना है, एक आनन्द का भाव जाग्रत करना है तो थोड़ी देर मेरे पास आकर बैठो, एक एकान्त स्थान पर अपने घर-परिवार के कोलाहल से शान्त होकर बैठो और मुझे आवाज देकर तो देखो मैं कोई तुमसे दूर थोड़े ही हूं, एक एकात्म भाव जाग्रत करने का प्रयास तो करो, तुम्हारे भीतर की शक्ति जाग कर ही रहेगी। जो महान शिव भाव है, वह जाग्रत होगा।

और आखिर लड़ किससे रहे हो तुम अपने आपसे और यह तो सोचो कि तुम्हारे पास समय कितना है, बचपन के २०-२५ वर्ष तो ऐसे ही बीत गये थोड़ा समय घर-परिवार में बीत गया और अब जब हम और तुम पास-पास हैं, फिर भी तुम भटक रहे हो, ऊलझ रहे हो व्यर्थ की बातों में, मेरे साथ चलना है तो छोड़ना पड़ेगा, यह सब वाद-विवाद अपने भीतर से सोचना पड़ेगा, तब कोई कमी नहीं रहेगी, इसके लिए पहले भीतर जगह बनानी होगी, जो भरा हुआ है कूड़ा-करकट उसे निकालना होगा, भीतर के दोषों पर कालीन बिछा देने से ये दोष, ये पीड़ाएं ठीक नहीं हो सकेंगी, उन्हें मिटाना है तो आओ मेरे पास और समा जाओ। मैं तो हर समय अपने शिष्यों के लिए तैयार रहा हूं और तैयार रहूंगा।

मैं तुम्हें सौंप दूंगा वह सब जो मेरे पास है, मेरा तो हाथ सदैव ऊपर ही रहा है और ऊपर ही रहेगा। ●

आपस की बातें

अभी-अभी हम सब शिष्यों ने गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर बम्बई जाकर पूज्य गुरुदेव को अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया, शिष्यों के लिए यह गौरव का समय था, जहां उन्होंने एकजुट होकर पूज्य गुरुदेव के समक्ष अपने हृदय के सभी कपाट खोल कर दिखा दिया कि शिष्यों में कितनी भक्ति है और शिष्य अपने गुरुदेव को कितना प्यार करते हैं।

पूज्य गुरुदेव का प्रवचन चल रहा था, डॉक्टरों ने मना किया था कि आप इतने बड़े अपार समूह के बीच न जांय, लेकिन पूज्य गुरुदेव भला कब मानने वाले थे, शिष्य हजारों किलोमीटर की यात्रा करके इस महत्वपूर्ण गुरु-शिष्य पर्व पर आये और गुरुदेव न जांय क्या ऐसा हो सकता है, वर्तमाय समय में गुरुदेव के स्वास्थ्य की स्थिति देखते हुए कुछ प्रमुख शिष्यों ने निवेदन किया कि आप कम से कम कष्ट करें और बस एक बार हमें दर्शन दे दें यही हमारे लिए पर्याप्त है, इन नेत्रों के माध्यम से आपके दर्शन का अमृत पान कर लेंगे। और हमारा जीवन सार्थक तथा हमारी यात्रा सफल हो जायेगी।

और पूज्य गुरुदेव पधारे

सबकी सलाह को नकारते हुए जब पूज्य श्री अपने शिष्यों के सम्मुख पहुंचे तो उनके दर्शन कर पूरा हाल जय जयकार से गुंजायमान हो उठा, वे केवल आधे घण्टे के लिए आये थे, लेकिन हम सब के बार-बार निवेदन करने के उपरान्त भी न उठे और दो घण्टे तक वहां बैठे रहे, अपने मन की बात शिष्यों को कहते रहे। पूज्य गुरुदेव का प्रवचन धीर-गंभीर वाणी में पूरे वायुमण्डल में गुंजायमान कर रहा था और शिष्यों के नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी। यह मिलन बड़ा ही अनोखा मिलन था जिसकी कोई मिशाल नहीं थी।

गुरुदेव ने कहा कि बस तुम्हें जो चाहिए मांग लो, मेरे पास अब समय बहुत कम है, तो शिष्यों का उत्तर था—हमे कुछ नहीं चाहिए, हमें केवल आप गुरुदेव ही चाहिए। आपके दर्शन हमें निरन्तर मिलते रहें बस हमारे लिए तो इतना ही पूर्ण है। आप सदेह सदैव हमें अशीर्वाद देते रहें तो हमारी झोली तो बाकी सब चीजों से अपने आप भर जायेगी। आपको पाकर तो हमारी जन्म-जन्म की भटकन दूर हुई है।

इस बार बम्बई में गुरु पूर्णिमा पर्व गुरु-शिष्य सम्बन्धों का नया इतिहास रचा गया। आने वाली पीढ़ियां याद करेंगी कि ऐसे आयोजन भी हुआ करते थे। इस आयोजन मे जो शान्ति थी, जो एक साधनात्मक, ज्ञानात्मक

आनन्दपूर्ण वातावरण था, उससे यह निश्चित हो गया था कि सिद्धाश्रम के योगी वहां विराजमान थे और पूज्य गुरुदेव के शिष्यों को अपने मित्रों को स्नेह प्रदान कर रहे थे। पृथ्वी पर ऐसे निश्छल स्नेहमय वातावरण की रचना भी हो सकती है ऐसा उन्होंने सोचा भी नहीं होगा।

अभी हमें बहुत कुछ करना है

गुरु पूर्णिमा के अमृत महोत्सव में पूज्य गुरुदेव ने अप्रत्यक्ष रूप से हमें जो कार्य सौंपे हैं, वे हमें बहुत पहले ही समझ लेने थे, उनके श्रीमुख से शब्द निकले उससे पहले ही हम कार्य करके दिखाए इसी में हम सबका सच्चा शिष्यत्व है। पूज्य गुरुदेव बहुत दूर की सोच कर कोई बात कहते हैं, उनकी हर बात में एक गहरा अर्थ होता है।

कुछ समय पहले जब उन्होंने कहा कि हर नगर में, हर तहसील में, हर गांव में **सिद्धाश्रम साधक परिवार** इकाई की स्थापना होनी चाहिए। अन्तर्आत्मा पर हाथ रख कर कहें कि कितनों ने इस महत्वपूर्ण बात को पूर्णरूप से अपने हृदय में उतार कर इसके लिए कार्य किया। केवल कुछ गिनी चुनी जगहों पर नई इकाइयों की स्थापना हुई। क्या केवल वे ही गुरुदेव के शिष्य हैं, बाकी सब क्या अपने स्वार्थ के लिए अपनी छोटी-मोटी कामनाओं के लिए ही पूज्य गुरुदेव से जुड़े हैं। पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि एक बार फिर निश्चय कर लो— जब जुड़ना ही है, तो मेरे साथ पूर्ण रूप मे जुड़ जाओ फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखना है। यदि गोआ में पंजीम जैसे स्थान पर जहां इसाई धर्म मानने वालों की भरमार है, वहां यदि **सिद्धाश्रम साधक परिवार** की स्थापना हो सकती है, तो कानपुर में क्यों नहीं, औरंगाबाद अथवा पटना में इसकी स्थापना क्यों नहीं हो सकती ? प्रिय मित्रों हमें पूज्य गुरुदेव को इन प्रश्नों का उत्तर देना ही होगा।

गुरु पूर्णिमा का यह संकल्प

"आज वर्ष १४ जुलाई ९२, संवत् २०४९ आषाढ़ शुक्ल की पूर्णिमा पर हम संकल्प लेते हैं कि हम अपने शहर में अपने गांव से **सिद्धाश्रम साधक परिवार** इकाई की स्थापना करेंगे प्रति सप्ताह गुरुवार को शिष्य एकत्रित होकर गुरु पूजन करेंगे, गुरु आरती करेंगे, हम हर महीने की २१ तारीख को विशेष आयोजन करेंगे"।

हमें केवल अपने आपमें ही सीमित नहीं रहना है, हम इस महा अनुष्ठान में इस 'सिद्धाश्रम साधक परिवार में अपने साथ अपनी पूर्ण श्रद्धा एवं शक्ति से मेरे गुरु भाइयों को सम्मिलित करेंगे, उन्हें जो आनन्द अमृत पान का हमें अनुभव हो रहा है, जो शिक्षा हमें प्राप्त हुई है, जो ज्ञानामृत हमें प्राप्त हुआ है, वह बांटेंगे और अपनी 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' की शाखाओं का ज्यादा से ज्यादा विस्तार कर अपने गांव, शहर में नवीन आध्यात्मिक जागृति केन्द्र बनाएंगे। याद रखें कि यह कार्य हम अपने लिए तो कर ही रहे हैं, साथ ही पूर्वजों का, पूज्य गुरुदेव का कर्ज जो हमारे ऊपर है, उसे हम ज्ञान चेतना के ये मन्दिर बना कर भावी पीढ़ी के लिए उपहार छोड़ेंगे। आने वाली पीढ़ियां हमारे इन कार्यों से गौरवान्वित होंगी गर्व करेंगी। हमारे पूर्वज कितने महान थे, जिन्होंने हमारे लिए ऐसा महान कार्य किया अपना जीवन समर्पित किया। ●

पट्टाभिषेक 'शिष्य रत्न'

अभी कुछ समय पूर्व पूज्य गुरुदेव ने कहा कि मुझे अपने सभी शिष्य बहुत प्रिय हैं, मैं सभी के काम काज को पिछले कुछ समय से विशेष बारीकी से देख रहा हूं, कुछ शिष्य ऐसे हैं, जिन्होंने मेरी सेवा में अपना जीवन ही समर्पित कर दिया है और उन्होंने जो कार्य किये हैं, उसे देखते हुए उन्हें **शिष्य रत्न** उपाधि से सम्मानित किया जाय और यह सम्मान मैं उन्हें अपने हाथों से प्रदान करूंगा।

उनकी इच्छा को भला कौन टाल सकता है, और जब वे एक बार निश्चय कर लेते हैं तो उस निश्चय से कौन उन्हें डिगा सकता है। उन्होंने तो जीवन संघर्ष किया है उनका हर निश्चय अपूर्व रहता है।

पूज्य गुरुदेव ने गुरु पूर्णिमा के दूसरे दिन जब हमें इन शिष्य रत्नों के नामों की जानकारी दी तो इन नामों को देख कर हृदय पुलकित हो उठा, पूज्य गुरुदेव ने कहा कि **शिष्य रत्नों** को हमें शारदीय नवरात्रि शिविर में जो कि २७ सितम्बर से प्रारम्भ हो रहा है, उस अवसर पर अपने हाथों से **पट्टाभिषेक** कर यह उपाधि प्रदान करूंगा।

इनमें से हर एक के कार्यों की समीक्षा और प्रशंसा जितनी की जाय कम है, इन सब शिष्यों का मन चिन्तन गुरु सेवा और गुरुमय विचारों का विस्तार तथा अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण रूप से निभाना रहा है, इनमें से प्रत्येक का लक्ष्य केवल गुरु सेवा ही रह गया है। इनके लिए अपनी नौकरी, अपना व्यापार अब प्रमुख नहीं है, प्रमुख है केवल सेवा और कर्त्तव्य।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, तथा **सिद्धाश्रम साधक परिवार** द्वारा इन सभी को हार्दिक बधाई, हमें प्रसन्नता है कि आपको गुरुदेव ने चुना है, आपका जीवन निरन्तर प्रगतिमय हो और गुरु सेवा के नये कीर्तिमान स्थापित करें—

१- श्री गणेश भाई सी. वटाणी	**बम्बई**
२- श्री महेन्द्र गुप्ता	**यमुनानगर**
३- श्री सुभाष शर्मा	**दिल्ली**
४- डॉ० एम० आर० वशिष्ठ	**हिमाचल प्रदेश**
५- श्री हरिनाथ राम टहल	**मारीसस**
६- श्रीमती सरला पंड्या	**बम्बई**

७- श्री सुभाष सुहासरिया बांकुड़ा (प.बं.)
८- श्रीमती एवं श्री (डॉ.) भगवत बचोने मारीसस
९- श्री प्रभाकर एस० माने बम्बई
१०- श्री रामचन्द्र श्रीवास्तव 'नील' रायबरेली
११- श्री आर० एन० खन्ना लखनऊ

आप सभी से निवेदन है कि नवरात्रि के शुभ अवसर पर गुरुधाम जोधपुर पधारें हमें आपको सम्मानित करना है, गुरुदेव आपको आशीर्वाद एवं उपाधि प्रदान करेंगे वह महान दृश्य अपने नेत्रों से देखना है।

जय गुरुदेव जय सिद्धाश्रम

'भगवान श्री निखिलेश्वरानन्द सत्संग सोसायटी'

मारीसस

पत्रिका सदस्यों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि मारीसस देश में 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' की मुख्य शाखा जिसका नामकरण वहां के सदस्यों द्वारा "भगवान श्री निखिलेश्वरानन्द सत्संग सोसायटी" रखा है। इस संस्था ने अपना कार्य तो सन् १९९१ में ही प्रारम्भ कर दिया था लेकिन अब तो १४-५-९२ को मारीसस सरकार द्वारा इसे रजिस्टर्ड करा दिया गया है।

संस्थान द्वारा नित्य प्रति पूजा, यज्ञ कीर्तन के कार्यक्रम सम्पन्न किये जाते हैं, संस्था के उद्देश्यों में प्रमुख है पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों का प्रचार। मां दुर्गा के मन्दिर की स्थापना तथा **मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान** पत्रिका का मारीसस में फ्रेंच तथा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन।

इस संस्था के अध्यक्ष—श्री हरिनाथ राम टहल, उपाध्यक्ष—श्री लेखराज सिंह रनधोनी, सचिव—श्रीमती विभूता अचूरजी हैं।

संस्था ने निकट भविष्य में एक विशेष यज्ञ तथा शिविर आयोजन का संकल्प किया है, इस संबंध में पत्रिका सम्पादक **श्री योगेन्द्र निर्मोही** मारीसस की यात्रा पर गये हैं।

"भगवान श्री निखिलेश्वरानन्द सत्संग सोसायटी" से पूज्य गुरुदेव से भारत के ५१ शिष्यों को आमन्त्रित करने का निश्चय भी किया है।

जय-विजय की महानतम विद्या

महानाम्नी विद्या

जिसका मूल नारायणास्त्रम् महामंत्र है

महा नाम्नी विद्या साधना की अत्यन्त गुप्त एवं अज्ञात विद्या रही है, इसकी जानकारी बहुत कम ऋषियों को थी। पराक्रमी देवों में अष्टावक्र, पातंजलि और वशिष्ठ विशेष ज्ञाता माने गये। शिव भक्त ही इस साधना को सम्पन्न कर सकता है और इस साधना में सिद्धि मिलना परम सौभाग्य की बात होती है क्योंकि यह चौसठ कलाओं से भी निराली महा विद्या है।

यह बहुत बड़ी भ्रान्ति है कि जो अपने घर-परिवार से दुखी हो जाते थे वे ही जंगल में जाकर तपस्या करते थे, पूर्व काल में ऐसा कुछ भी नहीं था, उस समय भी ब्राह्मण और क्षत्रिय समान रूप से तपस्या करते थे, और तपस्या का तात्पर्य है तप द्वारा, परिश्रम द्वारा, एकाग्रता द्वारा निश्चित लक्ष्य को ध्यान में रख कर किया गया कार्य, जब एक बार लक्ष्य निश्चित कर लिया तो फिर उसका पालन करना ही है. चाहे उसे प्राप्त करने में एक वर्ष लगे अथवा एक हजार वर्ष, इसीलिए कुछ तपस्याओं और साधनाओं के सम्बन्ध में जो उल्लेख आता है कि अमुक ऋषि ने अथवा अमुक राजा ने अथवा अमुक राक्षस ने सैकड़ों वर्ष तक तपस्या की तो यह बात पूर्णतया सत्य है। इसके साथ ही यह भी सत्य है कि आप जो कार्य करते हैं, सामान्य परिभाषा में जो पुण्य है और जो पाप है, उनका भी संचय होता है। साधना रहित जीवन, योग रहित जीवन, लक्ष्य रहित जीवन निश्चित रूप से पाप रूपी विष की वृद्धि करते हैं। जब यह विष बहुत अधिक बढ़ जाता है तो वह व्यक्ति दरिद्र कुल में उत्पन्न होता है, शरीर में बीमारियां लगी रहती हैं, एक समस्या से छुटकारा मिलता है तो दस नई समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

लेकिन इसमें दोष भी तो उसी का है।

यहां आश्रम में भी पूज्य गुरुदेव के पास लोग मिलने आते हैं तो बस उन्हें 'तुरन्त दान महा कल्यान' चाहिए, 'इस हाथ लें उस हाथ दें' वाली स्थिति चाहिए। साधनात्मक परिक्रियाएं सम्पन्न करने के लिए समय कहां? और जब तक साधना नहीं सम्पन्न की जाती तब तक पिछले जन्मों के और इस जन्म के संचित दोष रूपी विष दूर नहीं हो सकते हैं। पहले उस विष को बाहर करना आवश्यक है।

इसके लिए स्वयं ऋषियों ने तपस्याएं कीं, उनके प्रभाव को देखा और आगे परम्परा में ये महान विद्याएं अपने शिष्यों को दीं। समय का प्रभाव तो पड़ कर ही रहता है, अब केवल साधना का अर्थ यह ले लिया गया है कि जंगल में जाओ भूखे-प्यासे तपस्या करो, जो कि बिलकुल ही गलत बात है, वैसे भी आजकल सामान्य व्यक्ति तीर्थ स्थानों पर दो-दो रुपये में भविष्य उद्धार कर देने वाले भगवा वेशधारी साधुओं को देखता है जिन्हें न तो कोई ज्ञान है और न ही जिनका आचरण शुद्ध है, तो सामान्य व्यक्ति का खिन्न हो उठना स्वाभाविक है।

साधना तो तप है

अपने कार्य को सही रूप से पूरा करना अपने लक्ष्य को शुद्ध रूप से प्राप्त करना अपने कार्य में अपने आपको भुला देना ही साधना है और हमारी प्राचीन कालिक साधनाएं ऐसी ही तपस्या से परिपूर्ण थीं, जो एक बार संकल्प ले लिया उसे पूरा करना ही है, चाहे वह तपस्या राज्य प्राप्ति के लिए हो, पुत्र प्राप्ति के लिए हो अथवा शत्रु नाश के लिए हो, पूर्ण मनोयोग से एकाग्र भाव से की गई तपस्या के कारण साक्षात् भगवान को भी झुकना पड़ता है, और तभी साधक वर प्राप्त कर अपना मनोरथ पूरा करता है।

और जहां साधना है वहां यह निश्चित है कि प्राप्ति तो होगी ही, इस प्राप्ति में कम समय अथवा देर लगना साधक पर बहुत अधिक निर्भर करता है, जब पुण्य फल साथ देते हैं. सद्गुरुदेव द्वारा दिखाया हुआ मार्ग होता है, एक उत्साह रहता है तो फिर कार्य सफल होते हैं और साधना में भी सफलता मिलती है। प्रारम्भिक असफलताओं से निराश होने वाले साधकों द्वारा जब साधना झूठी ठहरा दी जाती है तो उनकी अज्ञानता से थोड़ा दुःख होता है। ये नहीं जानते कि अपने जीवन में कई जन्मों से जो जहर भरा हुआ है उसका निराकरण एक ही दिन में करना चाहते हैं इसके लिए तो साधना की अग्नि में तपना पड़ेगा तभी आन्तरिक शक्तियां वास्तविक रूप से जाग्रत हो सकेंगी। एक प्रयास के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा, यह प्रक्रिया निरन्तर की जानी आवश्यक है। प्रत्येक साधनात्मक कार्य का फल अवश्य प्राप्त होता है और यह जान लीजिये कि यह फल आपके जीवन में जुड़ता चला आ रहा है, एक श्रेष्ठ पूंजी का निर्माण हो रहा है। अतः एक बार कार्य प्रारम्भ करने के पश्चात् कृपया छोड़ें नहीं।

वेदोक्त साधनाएं

वेदों में कुछ विशेष विद्याओं का उल्लेख आया है, जिसमें जीवन दर्शन के अलावा तत्व दर्शन, ब्रह्मत्व प्राप्ति, आत्मा परमात्मा से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्ति, ध्यान, योग, तप, शक्ति जागरण, का उल्लेख है। इनमें प्रमुख हैं— उद्गीथ विद्या, संवर्ग विद्या, मधु विद्या, पचाग्नि विद्या, आत्म विद्या शाण्डिल्य विद्या, दहर विद्या, भूम विद्या, दीर्घायुष्य विद्या, मन्थ विद्या। इन विद्याओं को अलग-अलग ऋषियों ने सिद्ध किया और अपने साधना रहस्य को आगे अपने शिष्यों को सौंपा परन्तु ये विद्याएं मूल रूप से भौतिक जीवन से सम्बन्धित नहीं थीं, इसमें जीवन के आध्यात्मिक पक्ष की ओर विशेष ध्यान दिया गया था। लेकिन यह सत्य है कि जीवन में भौतिक सिद्धि की आवश्यकता भी उतनी ही है जितनी कि आध्यात्मिक सिद्धि की। इस हेतु भगवान श्री नारायण द्वारा रचित— **'महानाम्नी विद्या'** भौतिक जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठ कही जा सकती है। इस सिद्धि के सम्बन्ध

में लिखा है कि—

पुमान्पठति भक्त्या वैष्णवो नियतात्मना ।
तस्य सर्वाणि सिध्यन्ति यच्च दृष्टि गतं विषम्
अन्य देहविषं चैव न देहे सभवेद्ध्रुवम् ।
संग्रामे धारयत्यंगे शत्रून्यो जयतेक्षणात् ।।
अतः सद्यः जयस्तस्य विघ्नस्तस्य न जायते ।
किमत्र बहुनोक्तेन सर्वसौभाग्यसम्पदः
न भय तस्य कुर्वन्ति गगने भास्करादयः
भूत-प्रेत-पिशाचाश्च ग्रामग्राही तडाकिनी ।।
शाकिनीष महाघोरा वेतालाश्च महाबलाः ।
राक्षसाश्च महारौद्रा दानवा बलिनो हि ये ।।
असुराश्च शुराश्चैव अष्टयोनिश्च देवता
सर्वत्र स्तम्भिता तिष्ठन्मन्त्रोच्चारणमात्रतः ।।
इद मन्त्र रहस्य च नारायणास्त्रमेव च ।
त्रिकालं जपते नित्यं जयं प्राप्नोति मानवः ।।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ज्ञान विद्यां पराक्रमम् ।
चिन्तितार्थ सुख प्राप्तिः लभते नात्र सशयः ।।

अर्थात् महानाम्नी विद्या का नारायणास्त्र जो सिद्ध कर लेता है तथा वैष्णव नियम से रह कर भक्तिपूर्वक इसका पाठ करता है, उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। दृष्टिगत विष और अन्य विष दोष का उसके देह में संक्रमण नहीं होता, शत्रुओं पर निश्चित रूप से विजय प्राप्त कर लेता है, उसमें विघ्न नहीं होता, यहां अधिक कहने से क्या? इससे मनुष्य समस्त सौभाग्य और सम्पत्तियां प्राप्त करता है, इसमें संदेह नहीं, यह मन्त्र कभी भी अन्यथा नहीं जाता है, इसके प्रभाव से शीतल वस्तु ऊष्ण और ऊष्ण वस्तु शीतल हो जाती है, जो मेरे द्वारा कही गई इस विद्या को पढ़ता है उसका कभी अहित नहीं होता। इस विद्या रत्न को पुरुष अथवा स्त्री अपने हाथ में बांधें तो उसके सभी विघ्न भाग जाते हैं, आकाशचारी सूर्यादि ग्रह भी उसे भय नहीं देते, भूत-पिशाच ग्राम ग्राही, डाकिनी, महा भयंकर शाकिनी, वैताल, महाबली राक्षस, महारौद्र दानव, बली असुर, देवता, अष्टयोनि देवता सभी इस मन्त्रोच्चार से स्तम्भित हो जाते हैं, साधक के सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, यह मन्त्र रहस्य नारायणास्त्र ही है जो मनुष्य तीनों कालों में इसका जप करता है वह जय प्राप्त करता है। आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य ज्ञान, विद्या, पराक्रम, अर्थ और सुख प्राप्त करता है, इसमें कोई संशय नहीं।

ऐसी महान व्याख्या और इसका प्रभाव आज तक किसी अन्य विद्या के सम्बन्ध में नहीं आया है।

नारायणास्त्र

महा नाम्नी विद्या का मूल **नारायणास्त्र** ही है, पूज्य गुरुदेव की कृपा से यह महाज्ञान आज पत्रिका परिवार के सदस्यों को प्राप्त हो रहा है। इस विद्या को, इस अस्त्र को बड़ी ही सावधानी से सिद्ध करने की आवश्यकता है और जब एक बार सिद्धि प्राप्त हो जाती है तो केवल इस मन्त्र का उच्चारण ही कष्ट को दूर करने के लिए पर्याप्त है।

साधना विधान

साधक गण विधान को ध्यान से पढ़ें और उसी के अनुसार कार्य करें, पूरी विधि का अक्षरशः पालन होना आवश्यक है। इस साधना में गुरु पूजन का प्रमुख विधान है और वह भी तांत्रोक्त रूप से। तांत्रोक्त गुरु पूजन के सम्बन्ध में पत्रिका के अंक (जनवरी-९२ पृष्ठ संख्या १३) में विस्तृत रूप से आया है, उसी के अनुसार यह साधना सम्पन्न कर आगे महानाम्नी साधना सम्पन्न की जाती है।

विशेष सामग्री

१-तीन हरिहर रुद्राक्ष—दोष शान्ति पूजन हेतु।
२-तीन तांत्रोक्त फल – आकर्षण, विद्वेषण प्रयोग हेतु
३-महाज्योति नारायण चक्र - पूजन कर धारण करने हेतु।

साधना में कुछ मुहूर्तों का विशेष प्रभाव होता है, इस साधना हेतु सबसे निकट २४ अगस्त को जय विजय दिवस है और इसके पश्चात् १० सितम्बर को भगवान नारायण का विशेष दिवस अनन्त चतुर्दशी है, इन दोनों दिवसों को यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है।

इस साधना में साधक अपना संकल्प पहले निर्धारित कर लें और जिस प्रकार का कार्य हो, उसी के अनुरूप साधना करें, उच्चाटन सम्बन्धी प्रयोग में दोपहर को, मारण सम्बन्धी कार्यों हेतु सायंकाल को तथा शान्ति समृद्धि सम्बन्धी कार्यों हेतु अर्द्ध रात्रि को यह साधना सम्पन्न की जाती है। तीनों ही प्रकार के साधनाओं में प्रयोग विधान एक ही रहता है।

सबसे पहले अपने सामने पूज्य गुरुदेव का भव्य चित्र तथा **गुरु यन्त्र** स्थापित कर विधि-विधान सहित पूजन करें, पूजन में किसी भी प्रकार की जल्द बाजी नहीं करनी है।

तत्पश्चात् अपने सामने सात दीपक जलाएं, मध्य वाले दीपक के आगे **महाज्योति नारायण चक्र** पुष्प का आसन देकर स्थापित करें और इस चक्र का सभी पूजन सामग्री से पूजन करें।

अब अपने सामने के प्रथम तीन दीपक के आगे **तीन हरिहर रुद्राक्ष** रख कर उनका पूजन करें और अन्तिम तीन दीपकों के आगे **तीन तांत्रोक्त फल** स्थापित करें। हरिहर रुद्राक्ष की पूजा में घी का तथा पंचामृत का प्रयोग करें तथा तांत्रोक्त फल की पूजा में सिन्दूर, काजल का प्रयोग अवश्य करना है। पूरे पूजन के समय गुरु मन्त्र का जप निरन्तर चलते रहना चाहिए।

जब यह पूजन पूर्ण हो तो दीपक को महाज्योति नारायण चक्र के ऊपर सात बार फेर कर उसे पुनः स्थापित कर शान्त भाव से वीर मुद्रा में नारायणास्त्र का पाठ प्रारम्भ करना है, इसमें साधक को समय लगेगा लेकिन एक बार की साधना में कम से कम १०८ बार पाठ करना आवश्यक है। इस महान मन्त्र का धीरे-धीरे शब्दों का उच्चारण करते हुए इसी रूप में पाठ करना है अतः इसे ध्यान से पढ़ें। यह इसका मूल तत्व है।

अथ नारायणास्त्रम् महामन्त्र

हरिः ॐ नमो भगवते श्रीनारायणाय नमो नारायणाय विश्वमूर्तये नमः श्री पुरुषोत्तमाय पुष्प-दृष्टिं प्रत्यक्षं या परोक्षं वा अजीर्णं पंचविषूचिकां हन हन ऐकाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुर शीतिवातानष्टादशकुष्ठान् अष्टादश-कुष्ठान् हन हन सर्वदोषान् भंजय भंजय तत्सर्वं-न्नाशय नाशय शोषय शोषय आकर्षय आकर्षय शत्रून् मारय मारय उच्चाटयोच्चाटय विद्वेषय द्विषयय स्तम्भय स्तम्भय निवारय विघ्नैर्हन विघ्नैर्हन दह दह मथ मथ विध्वंशय विध्वंशय चक्रं गृहीत्वा शीघ्रमागच्छ चक्रेण हत्वा परविद्यां छेदय छेदय भेदय भेदय चतुःशी तानि विस्फोटय विस्फोटय अर्शवातशूल दृष्टिसर्पसिंहव्याघ्रद्विपदचतुष्पदवाह्या-न्दिवि भुव्यन्तरिक्षो अन्येपि केचित् तान्द्वेषयतान् सर्वान् हन हन विद्युन्मेघनदीपर्वत।टवीसर्वस्थान रात्रिदिनपथचौरान् वशं कुरु कुरु हरिः ॐ नमो भगवते ह्रीं हुं फट् स्वाहा ठः ठं ठं ठः नमः।

मन्त्र जप अनुष्ठान पूर्ण हो जाय तो थोड़ी देर तक शान्त भाव से बैठ कर गुरु ध्यान करते रहें, सात दिन तक अथवा सात बार जैसे भी सुविधा हो इस प्रयोग को सम्पन्न करना है। सात बार प्रयोग के बाद तांत्रोक्त फल को जमीन में गाड़ दें तथा हरिहर रुद्राक्ष को किसी नदी जल सरोवर इत्यदि में भक्ति भाव सहित अर्पित कर दें। दिव्य नारायण ज्योति चक्र साधक को धारण करना है और इसे हर समय धारण किये रखना है।

सात पूजन के पश्चात् इसका जो प्रभाव प्राप्त होता है, उसका अनुभव साधक को स्वयं प्रत्यक्ष प्राप्त होता है क्योंकि यह साधना तो गुरु समर्पण में उस महान इष्ट की साधना है, जिसके आगे सारी विपदाएं, कष्ट तत्काल नष्ट हो जाते हैं। ●

हे देवेश गणपति ! शत् शत् वन्दनम्

सर्व कामना सिद्धि–विघ्न विनाशक देव

त्रि-गणेश विधानम्

गणपति साधना के नियमों के सम्बन्ध में बड़ी ही भ्रान्ति है और जब प्रत्येक साधक यह जानता है कि कोई भी पूजा साधना अथवा शुभ कार्य गणपति पूजा के बिना संभव नहीं है तो यह कार्य क्यों नहीं सही रूप से ही सम्पन्न किया जाय।

प्रस्तुत है, गणपति साधना के विशेष नियम, क्रम, इत्यादि जिसको विशेष ध्यान में रखना आवश्यक है।

गणपति आराधना

साधकों को चाहिए कि वे शास्त्र की मर्यादा के अनुकूल कार्य और साधना करें जिससे कि उन्हें शीघ्र और पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके, इसके लिए निम्न तथ्यों का ध्यान साधकों और गृहस्थ व्यक्तियों के लिए आवश्यक है।

सभी कार्यों की सिद्धि के लिए गणपति के साथ श्री सूर्य, श्री दुर्गा, श्री शिव और श्री विष्णु की पूजा भी करनी चाहिए।

२-गृहस्थ व्यक्तियों को केवल एक ही देवता की पूजा नहीं करनी चाहिए अपितु उनके लिए एक से अधिक देवताओं की पूजा अनुकूल रहती है।

३-पूजा में साधक को चाहिए कि सर्वप्रथम सूर्य फिर गणपति फिर दुर्गा, शिव और विष्णु की पूजा

करें, क्रम इसी प्रकार रहना चाहिए।

४-कभी-कभी घर में या पूजा स्थान में अधिक मूर्तियां या चित्र हो जाते हैं, अतः साधकों को इनकी संख्या का ज्ञान आवश्यक है—

घर में दो शिवलिंग, दो शंख, दो सूर्य प्रतिमाएं, दो सालिग्राम, दो गोमती चक्र, तीन गणपति तथा तीन देवी प्रतिमाएं सर्वथा वर्जित हैं, इस प्रकार की संख्या दरिद्रता लाती है।

५-गणपति पूजा या साधना प्रारम्भ करने के लिए चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, माघ एवं फाल्गुन महीने के शुक्ल पक्ष मान्य हैं।

६-भौमवार से गणपति साधना नहीं सम्पन्न करनी चाहिए। इसी प्रकार किसी भी पक्ष की चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी भी वर्जित है।

७-मत्स्य पुराण के अनुसार गणपति की मूर्ति साधक के बारह अंगुल परिमाण की होनी चाहिए, इससे बड़ी त्याज्य है पर इससे छोटी ग्राह्य है।

८-गणपति आदि देवताओं का मन्दिर घर के ईशान कोण में होना चाहिए तथा देवताओं का मुख पश्चिम की तरफ रहे—

(अ) ऐशान्यं देवमन्दिरम्।

(आ) देवानां हि मुखं कार्यं पश्चिमायां सदा-बुधैः। —(नारद पुराण)

९-गणपति का अभिषेक ताम्र पात्र पर रखे हुए जल से करना चाहिए।

१०-लाल वर्ण वाली सुरभित पुष्पों के साथ दुर्वांकुर (दूब) गणेश जी को अर्पित किये जाते हैं।

११-तुलसीदल का प्रयोग गणपति के लिए सर्वथा निषिद्ध है **'न तुलस्या गणाधिपम्'।**

१२-गणपति के मन्दिर की मात्र एक परिक्रमा करनी चाहिए, इससे ज्यादा परिक्रमा दरिद्रता देने वाली मानी गई है।

१३-गणपति को चढ़ाया हुआ नैवेद्य या प्रसाद सबसे पहले गणपति सेवकों को देना चाहिए इसके बाद ही साधक उस प्रसाद को ग्रहण करें। गणपति के पांच सेवकों के नाम १--गणेश, २-गालव, ३-गार्ग्य, ४-मंगल और ५-सुधाकर है।

१४-गणपति उपनिषद में कहा गया है कि गणपति पूजन से पूर्व गुरु पूजा आवश्यक है।

१५-गणेश गायत्री मन्त्र इस प्रकार है—

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। —(गणपति उपनिषद)

१६-गणेश नाम का अर्थ इस प्रकार है—

ज्ञानार्थवाचको गश्च णश्च निर्वाण वाचकः।
तयोरीशं परं ब्रह्म गणेशं प्रणमाम्यहम्॥

अर्थात् 'ग' ज्ञानार्थ वाचक और 'ण' निर्वाण वाचक है। अतः गणेश नाम भौतिक सुख और मोक्ष प्राप्ति मे समान रूप में सहायक है।

साधनात्मक दृष्टि से विभिन्न कार्यों हेतु गणपति के अलग-अलग स्वरूपों की साधना की जाती है, और इस सम्बन्ध में तन्त्र सार ग्रन्थ में लिखा है कि—

पीतं स्मरेत् स्तम्भन कार्य एवं वश्याय मन्त्री हारुणं स्मरेत् तम्
कृष्ण स्मरेन्मारण कर्मणीशमुच्चाटने धूम्रनिभं स्मरेत तम्॥
बन्धूकपुष्पदिनिभं च कृष्टो स्मरेद् बलार्थं किल पुष्टिकार्ये।
स्मरेद् धनार्थी हरिवर्णमेतं मुक्तो च शुक्लं मनुवित् स्मरेत तम्
एवं प्रकारेण गणं त्रिकालं ध्यायन्जपन् सिद्धियुतो भवेत् सः।

अर्थात् साधकों को चाहिए कि वे स्तम्भन कार्य में गणेश जी के पीत कान्ति वाले स्वरूप का ध्यान करें, वशीकरण आदि कार्यों में गणेश जी का अरुण कान्तिमय

स्वरूप का चिन्तन अनुकूल रहता है। मारण कार्य में कृष्ण कान्ति का ध्यान फलदायक माना गया है, इसी प्रकार उच्चाटन कार्य में धूम्र वर्ण वाले गणपति का स्मरण करना चाहिए, आकर्षण कार्य में बंधूक पुष्प के समान लाल वर्ण वाले गणपति का चिन्तन करना चाहिए, बल एवं पुष्टि कार्य के लिए शान्त गणपति का ध्यान अनुकूल माना गया है, धन प्राप्ति के इच्छुक साधकों को हरित वर्ण वाले गणपति का ध्यान करना चाहिए तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए शुक्ल वर्ण वाले गणपति का ध्यान पूर्ण फलदायक माना गया है।

शास्त्रोक्त कथन है कि जो साधक नित्य गणपति के १२ नामों का स्मरण करता है और उन्हें भक्ति पूर्वक नमस्कार करता है, उसकी कामनाएं अवश्य ही पूर्ण होती हैं। गणपति के १२ नाम निम्न प्रकार से हैं—

१-सुमुखाय नमः, २-एकदन्ताय नमः, ३-कपिलाय नमः, ४-गजकर्णकाय नम, ५-लम्बोदराय नमः, ६-विकटाय नमः, ७-विघ्ननाशाय नमः, ८-विनायकाय नमः, ९-धूम्रकेतवे नमः, १०-गणाध्यक्षाय नमः, ११-भालचन्द्राय नमः, १२-गजाननाय नमः।

इसी अध्याय में आगे पाठकों के लिए कुछ विशेष गणपति साधनाएं दी जा रही हैं. अपनी कामना के अनुसार कार्य के अनुसार साधक को विवेचन कर साधना करनी चाहिए—

१-उच्छिष्ट गणपति प्रयोग

वाद विवाद, मुकदमा, लड़ाई, शत्रु बाधा शान्ति, भय नाश, जुएं में जीत इत्यादि कार्यों के लिए उच्छिष्ट गणपति की साधना सम्पन्न की जाती है।

विनियोग

ॐ अस्योच्छिष्ट गणपति मन्त्रस्य कंकोल ऋषिः विराट् छन्दः उच्छिष्ट गणपति देवता सर्वाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

इस प्रकार संकल्प लेकर चार भुजा वाले, रक्त वर्ण, तीन नेत्र, कमल दल पर विराजमान, दाहिने हाथ में पाश एवं दन्त धारण किये हुए, उन्मत्त मुद्रा में स्थिर उच्छिष्ट गणपति का ध्यान करना चाहिए। इसके पश्चात् आठ मातृकाएं—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा एवं लक्ष्मी। इनका आठ दिशाओं में स्थापना कर पूजन करना चाहिए। पूजन हेतु उच्छिष्ट गणपति चित्र, उच्छिष्ट गणपति यन्त्र अष्टमातृका प्रतीक की स्थापना कर विधिवत पूजा होनी चाहिए। प्रसाद स्वरूप में लड्डू का अर्पण करना चाहिए।

तत्पश्चात् निम्न उच्छिष्ट गणपति मन्त्र का जप ग्यारह दिन तक करना चाहिए।

मन्त्र

॥ ह्रीं गं हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा ॥

मन्त्र अनुष्ठान के पश्चात् साधक को हवन अवश्य करना चाहिए, हवन में घी, शहद, शक्कर तथा खील (लाजा) से वशीकरण क्रिया सम्पन्न होती है; पुष्प एवं सरसों के तेल का हवन करने से शत्रुओं का विद्वेषण होता है।

२-शक्ति विनायक गणपति अनुष्ठान

लक्ष्मी, धन, सुन्दर पत्नी प्राप्ति, शक्ति प्राप्ति, एवं कार्य सिद्धि हेतु, शक्ति विनायक गणपति की साधना करनी चाहिए।

विनियोग

अस्य शक्तिगणाधिप मन्त्रस्य भार्गव ऋषिः विराट् छन्दः शक्तिगणाधिपो देवता ह्रीं शक्तिः ग्रीं बीजं ममाभीष्ट सिद्धये विनियोगः।

अंगन्यास

ॐ ग्रां हृदयाय नमः।
ॐ ग्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ग्रूं शिखायै वषट्।
ॐ ग्रैं कवचाय हुं।
ॐ ग्रौं नेत्र त्रयाय वौषट्।
ॐ ग्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान

**विषाणांकुश वक्षसूत्रं च पाशं दधानं करैर्मोदकं पुष्करेण ।
स्वपत्न्यायुतं हेमभूषाभराढ्यं गणेशं समुद्यद्दिनेशाभमीडे ॥**

दाहिने हाथ में अंकुश एवं अक्षसूत्र तथा बाएं हाथों में दन्त एवं पाश धारण किये हुए, सूंड में मोदक लिये हुए, अपनी पत्नी के साथ सुवर्ण के आभूषणों से अलंकृत तथा उदीयमान सूर्य जैसी आभा वाले भगवान गणेश जी की मैं वन्दना करता हूं ।

सामग्री

शक्ति विनायक शंख, शक्ति विनायक यन्त्र ।

विधान

बुधवार के दिन प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने **शक्ति विनायक यन्त्र** तथा गणपति स्वरूप **शक्तिमय शंख** को पीला वस्त्र बिछा कर स्थापना करें, सर्वप्रथम सूर्य पूजन कर यंत्र एवं शंख का पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात् निम्न मन्त्र का जप सम्पन्न करें, इस मत्र का सवा लाख जप करने से ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है ।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं ॥

सवा लाख मन्त्र जप साधक अपने समय के अनुसार ग्यारह अथवा इक्कीस दिन में सम्पन्न कर सकता है, इसके पश्चात् हवन करना चाहिए, घी सहित अन्न की आहुति तत्पश्चात् केला तथा नारियल की आहुति सम्पन्न करने से साधक अन्न, धन, धान्य एवं वशीकरण शक्ति से सिद्ध होता है ।

३-हरिद्रा गणपति अनुष्ठान

जीवन में जिसके पास आकर्षण शक्ति है, अपने शत्रुओं को स्तम्भन करने की क्षमता है, वही व्यक्ति पूर्ण सफल रहता है, हरिद्रा गणपति, गणपति साधना का सर्व श्रेष्ठ स्वरूप है ।

विनियोग

ॐ अस्य श्री हरिद्रागणनायक मन्त्रस्य मदन ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः हरिद्रागणनायको देवता ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

अंगन्यास

ॐ हुं गं ग्लौं हृदयाय नमः ।
हरिद्रागणपतये शिरसे स्वाहा ।
वरवरद शिखायै वषट् ।
सर्वजनहृदयं कवचाय हुं ।
स्तम्भय स्तम्भय नेत्रत्रयाय वौषट् ।
स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यान

पाशांकुशी मोदकमेकदन्तं करैर्दधानं कनकासनस्थम् ।
हरिद्रखण्डप्रतिमं त्रिनेत्रं पीतांकुशं रात्रिगणेशमीडे ॥

अर्थात् दाहिने हाथों में अंकुश एवं मोदक तथा बाएं हाथ में पाश एवं दन्त धारण किये हुए, सोने के सिंहासन पर स्थित, हल्दी जैसी आभा वाले, तीन नेत्र वाले, पीत वस्त्र धारण करने वाले हरिद्रा गणपति की वन्दना करता हूं ।

मन्त्र

॥ ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वरवरद
सर्वजनहृदयं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा ॥

सामग्री

हरिद्रागणपति, पीठ माला ।

जप संख्या

सवा लाख ।

ये सभी साधनाएं उत्तम साधनाएं हैं और जो इन्हें सम्पन्न करता है, उसके जीवन में कष्ट, संकट आ ही नहीं सकते । गणपति अपने भक्तों पर निरन्तर कृपा दृष्टि प्रदान करने वाले सहज, सरल देव हैं । ●

हर घर परिवार के लिए आवश्यक

ये छः वरदान स्वरूप यन्त्र

जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति प्राप्त करने के लिए मनुष्य को सभी वे साधन उपयोग में लाने चाहिए जो कि समयोचित और समाजोचित हों, यह हम भारत वासियों का सौभाग्य है कि हमारे जीवन में कई प्रकार की विद्याएं जीवित हैं, और हमारे पूर्वजों ने इन विद्याओं का उपयोग कर अपने जीवन को सभी दृष्टियों से अनुकूल एवं सुखमय बनाया था।

यन्त्र एक विशेष प्रभाव युक्त अग्नि पुंज हैं, इनका निर्माण इस प्रकार से किया गया है कि वे सभी लकीरें मिल कर एक विशेष प्रभाव की सृष्टि करें, और उनसे मनोवांछित सफलता प्राप्त हो, इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण विशेष समय में किया जाना चाहिए और यन्त्र निर्माण के बाद उसमें प्राण प्रतिष्ठा होनी चाहिए जिससे कि वे यन्त्र पूर्णतः प्रभावयुक्त बन सकें।

इस प्रकार के प्रभावयुक्त यन्त्र की नित्य पूजा आवश्यक नहीं है, केवल मात्र घर में रहने से ही वे अनुकूल फल देने में समर्थ हो जाते हैं, मैं नीचे ऐसे ही कुछ विशेष यन्त्रों का परिचय दे रहा हूं जो कि हमारे पूर्वजों की तरफ से हम लोगों को वरदान स्वरूप हैं—

१-श्री यन्त्र

भारतवर्ष के बच्चे-बच्चे को श्री यन्त्र के बारे में जानकारी है, आर्थिक अनुकूलता एवं अर्थ प्राप्ति के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण यन्त्र माना जाता है, यह आठ प्रकार का होता है, परन्तु कूर्म पृष्ठीय श्री यन्त्र प्रत्येक गृहस्थ के लिए उपयोगी माना गया है।

केवल घर में, कार्यालय में, कारखाने में या पूजा स्थान में रखने मात्र से ही आर्थिक अनुकूलता अनुभव होने लग जाती है, किसी योग्य विद्वान से ताम्र पत्र पर या धातु पर अंकित मन्त्र सिद्ध श्री यन्त्र प्राप्त कर लेना चाहिए, इसके बाद **कमलगट्टा माला** से निम्न मन्त्र की एक माला जप नित्य करें, तो आश्चर्यजनक रूप से आर्थिक अनुकूलता अनुभव होने लगती है।

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।।

२-बगलामुखी यन्त्र

दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या बगलामुखी देवी है, जिसका शुद्ध नाम वल्गा मुखी है, इसकी साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गयी है, बगलामुखी यन्त्र भी अत्यन्त ही तेजस्वी और प्रभावयुक्त माना जाता है, शत्रुओं का संहार, शत्रुओं पर विजय, मुकदमे में सफलता आदि सभी कार्यों में यह महत्वपूर्ण और शीघ्र प्रभावोत्पादक माना गया है।

इस यन्त्र को रविवार के दिन अपने पूजा स्थान में स्थापित कर निम्न मन्त्र का जप करना चाहिए, इसमें **हल्दी की माला** का प्रयोग किया जाता है, तथा साधक को मन्त्र जप करते समय पीले वस्त्र ही धारण करने चाहिए।

मन्त्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुख पदं

स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाह ।।

स्वर्णाकर्षण भैरव यन्त्र

आर्थिक उन्नति एवं व्यापार की सफलता के लिए यह यन्त्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना गया है, और जो गृहस्थ नया व्यापार करना चाहे या व्यापार में आश्चर्यजनक रूप से प्रगति करना चाहे, उसे अपने कार्यालय में या घर में **स्वर्णाकर्षण भैरव यन्त्र** अवश्य ही स्थापित करना चाहिए, यह यन्त्र ताम्र पत्र पर अंकित होता है और मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा होने पर आश्चर्यजनक रूप से फल देने वाला माना गया है ।

यन्त्र स्थापन किसी भी मंगलवार को प्रातः करना चाहिए और सामने तेल का दीपक लगा कर **मूंगामाला** से निम्न मन्त्र की एक माला नित्य फेरनी चाहिए—

मन्त्र

ॐ ह्लां क्षं खां घ्रां भ्रां क्लों श्रीं हुं स्वर्णाकर्षण भैरव नाथ मम गृहे अतुल भण्डार देहि देहि हुं फट् ।।

४-तारा यन्त्र

तारा देवी महाविद्या साधना मानी गयी है और कहते हैं कि तारा यन्त्र घर में स्थापित होने पर आकस्मिक धन प्राप्ति के अवसर बढ़ जाते हैं, यों भी सुना जाता है कि जो साधक तारा साधना सम्पन्न कर लेता है, उसे तारा देवी नित्य दो तोला स्वर्ण प्रदान करती है, वस्तुतः तारा साधना जीवन के सर्वतोन्मुखी उन्नति में विशेष रूप से सहायक है ।

इस यन्त्र का निर्माण ताम्र पात्र पर होता है और बुधवार को प्रातः इस यन्त्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर उसके सामने तेल का दीपक लगा कर **स्फटिक माला** से निम्न मन्त्र की एक माला जप नित्य करना चाहिए—

मन्त्र

।। ऐं ओं ह्रीं क्रीं हुं फट् ।।

५-वशीकरण यन्त्र

जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए वशीकरण यन्त्र की विशेष आवश्यकता मानी गयी है, यदि किसी से मत-भेद हो तो उसे वश में करने, अधिकारियों को अपने अनुकूल बनाने तथा किसी को भी अपने अनुकूल में लेने के लिए वशीकरण यन्त्र विशेष अनुकूल माना गया है. यह चांदी से निर्मित होता है तथा इसे गले में या बांह पर बांधा जा सकता है ।

यन्त्र धारण करने के बाद **मूंगा माला** से निम्न मन्त्र की एक माला नित्य फेरनी चाहिए—

मन्त्र

ॐ नमः भगवते कामदेवं यस्य यस्य हृदयं भवामि यश्च यश्च मम मुखं पश्यति तं तं मोहय मोहय स्वाहा ।।

६-शत्रु स्तम्भन यन्त्र

यह यन्त्र भी ताबीज की तरह चांदी से निर्मित होता है और गले में पहिना जा सकता है, या बांह में बांधा जा सकता है, इसके धारण करने के बाद बिना किसी प्रयास से ही उसके शत्रु अनुकूल बन जाते हैं तथा किसी प्रकार की कोई बाधा या परेशानी उसके जीवन में नहीं आती। मेरी राय में प्रत्येक व्यक्ति को **शत्रु स्तम्भन यन्त्र** धारण कर लेना चाहिए, जिससे कि जीवन में परेशानियां कम आ सकें ।

मन्त्र

ॐ नमः वज्र का कोठा जिसमें पिण्ड हमारा बैठा ईश्वर कुंजी ब्रह्मा का ताला मेरे आठों याम का यती हनुमन्त रखवाला ।।

धारण करने के बाद **मूंगा माला** से निम्न मन्त्र की नित्य फेरें तो उसके जीवन में विशेष अनुकूलता प्राप्त होनी है । ●

अद्भुत आश्चर्यजनक

पन्द्रहिया यन्त्र

यन्त्र चिन्तमणि में बताया गया है, कि जब जीवन के पुण्य उदय होते हैं और भविष्य कल्याणकारी होता है, तभी व्यक्ति के मन में यन्त्र प्राप्त करने या यन्त्र उत्कीर्ण करने का विचार आता है, यन्त्र का लेखन प्राचीन काल से होता आया है और हमारे पूर्वजों ने इस बात को अनुभव किया है, कि यदि सही प्रकार से यन्त्र उत्कीर्ण हो और उसको पूरी तरह से उपयोग में लिया जाय, तो उससे श्रेष्ठ और कोई विधि-विधान नहीं है।

ये यन्त्र दिखने में अत्यन्त सरल और सामान्य प्रतीत होते हैं, परन्तु उनका प्रभाव निश्चित रूप से अत्यधिक व्यापक और महत्वपूर्ण होता है, पन्द्रह का यन्त्र इसी प्रकार के श्रेष्ठ यन्त्रों में से एक है, जिसका उपयोग सैकड़ों वर्षों से भारतीय करते आ रहे हैं, भारत में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी मैंने पन्द्रह के यन्त्र को उत्कीर्ण देखा है और यह अनुभव किया है कि इस यन्त्र का प्रभाव व्यापक, महत्वपूर्ण तथा श्रेष्ठ है।

पन्द्रह का यन्त्र दरिद्रता नाश, आर्थिक उन्नति और सभी प्रकार की समृद्धि देने वाला माना जाता है, इसीलिए दीपावली के अवसर पर घर के मुख्य द्वार पर पन्द्रह का यन्त्र अंकित किया जाता है, व्यापारी लोग अपनी बही-खातों पर दीपावली पूजन करते समय बही के प्रथम पृष्ठ पर पन्द्रह का यन्त्र अंकित कर उसे लक्ष्मी का पर्याय मान कर उसकी पूजा करते हैं, घर में किसी प्रकार की समस्या आने पर भी विद्वान लोग पन्द्रह के यन्त्र के उपयोग की सलाह देते हैं, इस दृष्टि से यह यन्त्र अत्यधिक सरल होने के साथ-साथ अत्यधिक महत्वपूर्ण और प्रभाव युक्त है।

यन्त्र को किसी भी सफेद कागज पर या बही पर केसर या कुंकुम से उत्कीर्ण किया जा सकता है, इसके अलावा भी कुछ विशिष्ट प्रयोग मेरे जीवन में अनुभूत हुए हैं उन्हें मैं स्पष्ट कर रहा हूं—

२	९	४
७	५	३
६	१	८

१-इस यन्त्र को कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन बरगद की कलम से सफेद कागज पर १००१ बार लिखने से जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

२-यदि अगर की कलम से यह यन्त्र पृथ्वी पर १००० बार लिखें तो शत्रु-भय समाप्त हो जाता है तथा बन्धन से मुक्ति प्राप्त होती है।

३-कागज पर यदि पीपल की कलम से १००० बार उत्कीर्ण कर, लक्ष्मी के सामने रख देने से

दरिद्रता का नाश होता है।

इस प्रकार यन्त्र उत्कीर्ण करने में कुंकुंम या केसर का प्रयोग किया जा सकता है।

४-गौमूत्र, कपूर और गोरोचन बराबर मात्रा में मिलाकर उसकी स्याही बनावें और पीपल के जड़ की कलम से एकान्त में बैठ कर भोज पत्र पर यदि यह यन्त्र १००० बार उत्कीर्ण करें, तो शीघ्र ही उसे मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है।

५-बेल, हरताल और मैनसिल, इन तीनों को बराबर मात्रा में घोल कर स्याही बना दें और बड़ की कलम से कागज पर यह यन्त्र २१०० बार उत्कीर्ण करने से व्यापार में वृद्धि होती है।

६-एक सपाट पत्थर लेकर हल्दी की स्याही से पत्थर पर किसी भी कलम से एक सौ आठ बार यह यन्त्र उत्कीर्ण कर यदि शत्रु के दरवाजे के सामने गाड़ दिया जाय, तो शत्रु के घर में हर समय कलह बनी रहती है और वह निरन्तर दुखी रहता है।

७-कपूर और हल्दी बराबर मात्रा में लेकर उसे भोज पत्र पर अंकित कर चांदी के ताबीज में डाल कर गले में बांध देने से बालकों से सम्बन्धित सभी रोग समाप्त हो जाते हैं और बालक स्वस्थ तथा निरोग बना रहता है।

८-भोज पत्र पर केसर से यह यन्त्र उत्कीर्ण कर चांदी के ताबीज में डाल कर भुजा पर बांध दें तो शिक्षा में सफलता मिलती है और परीक्षा में सफल होता है।

९-जिनको सन्तान प्राप्ति की इच्छा हो, उन्हें चाहिए कि बड़ के पत्तों पर यह यन्त्र १००० बार कुंकुंम से उत्कीर्ण करें और फिर ये १००० बड़ के पत्ते सन्दूक में रख दें और नित्य रविवार को इसके सामने दीपक लगा कर सन्तान प्राप्ति की इच्छा प्रकट करें, तो शीघ्र ही सन्तान प्राप्ति होती है।

१०-यदि व्यक्ति शारीरिक रूप से कमजोर है या नामर्द हो अथवा किसी प्रकार की बीमारी हो तो उसको चाहिए, कि कुंकुंम और हल्दी को मिलाकर उसके लेप से कांसी की थाली में १००८ बार इस यन्त्र को उत्कीर्ण करें तो उसी दिन से उसकी बीमारी समाप्त होने लगती है और शरीर में साहस एवं ताकत का अनुभव होने लगता है।

११-जिनको पेट सम्बन्धी बीमारी हो उन्हें चाहिए कि वे शनिवार को केले के पत्ते पर केसर से १०८ बार इस यन्त्र को उत्कीर्ण करें, ऐसा करने पर पेट से सम्बन्धित सभी रोग समाप्त हो जाते हैं।

१२-सोने की कलम से केसर द्वारा कागज पर यह यन्त्र अंकित कर फ्रेम में मढ़वा कर पूजा स्थान में रख दिया जाय तो उसके जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

१३-केसर, चन्दन, अगर, कपूर और कस्तूरी को मिला कर सोने की कलम से कागज पर यन्त्र उत्कीर्ण कर अपने घर के गहनों के सन्दूक में तिजोरी में या दुकान पर यह यन्त्र रख दिया जाय, तो आगे के पूरे जीवन भर वह निरन्तर उन्नति करता रहता है, और सभी दृष्टियों से सम्पन्नता और पूर्णता प्राप्त करता है।

विशेष

यन्त्र निर्माण एवं प्राण प्रतिष्ठा की प्रक्रिया शुद्ध रूप से ही सम्पन्न की जानी आवश्यक है, पत्रिक सदस्यों हेतु कार्यालय में पन्द्रहिया यन्त्रों का निर्माण एवं प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न किया गया है जो पाठक यह यन्त्र प्राप्त करना चाहते हैं वे कार्यालय को पत्र भेज कर प्राप्त कर सकते हैं।

वस्तुतः यह यन्त्र अत्यधिक महत्वपूर्ण श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है, तथा सैकड़ों-हजारों लोगों ने इसके प्रयोग से लाभ उठाया है।

तांत्रोक्त, तीव्र एवं तीक्ष्ण साधना

छिन्नमस्ता साधना

छिन्नमस्ता-साधना ही एक ऐसी साधना है, जिसको सम्पन्न कर सामान्य गृहस्थ भी योगी का पद प्राप्त कर सकता है, वायु वेग से शून्य के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकता है, जमीन से उठ कर हवा में स्थिर हो सकता है, एक शरीर स्वरूप को कई शरीरों में बदल सकता है और अनेक ऐसी सिद्धियों का स्वामी बन सकता है, जो आश्चर्य की गणना में आती हैं।

'छिन्नमस्ता भवेत्सुखी' अर्थात् जो छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न कर लेता है वह साधक जीवन में सभी दृष्टियों से सुखी रहता है, पूज्य गुरुदेव के प्रिय शिष्य प्रज्ञानन्द के द्वारा प्रस्तुत एक महत्वपूर्ण साधना विधि, जो प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत है—

मैं अपने जीवन में साधना का अनुगामी ही रहा हूं, मैंने बचपन से ही निश्चय कर लिया था कि जीवन में एक-एक करके दसों महाविद्याओं को सिद्ध करूंगा और एक ऐसा आदर्श उपस्थित करूंगा, जिससे कि साधक लाभान्वित हो सकें।

मैंने यह सुना था कि अन्य साधनाएं फिर भी सम्पन्न की जा सकती हैं, परन्तु छिन्नमस्ता साधना अपने आपमें इतनी सूक्ष्म और संवेदनशील है कि थोड़ी सी गलती भी अनर्थ कर देती है, इसलिए छिन्नमस्ता साधना करने से पूर्व साधक को शारीरिक और मानसिक दोनों ही

दृष्टियों से सक्षम और तत्पर होना चाहिए ।

मैं अपने गुरु के सान्निध्य में छः महाविद्या साधनाएं सिद्ध कर चुका था, यद्यपि इन महाविद्या साधनाओं को सम्पन्न करने में मुझे काफी कठिनाइयां उठानी पड़ी थीं, परन्तु फिर भी मैं इन सभी महाविद्या साधनाओं को सम्पन्न कर सका, इसके पीछे जहां मेरी लगन और परिश्रम था, एकात्म भाव और पूर्णता के प्रति ललक थी, वहीं अपने गुरुदेव का साहचर्य और उनकी कृपा भी थी, कि जिनकी वजह से मैं सभी साधनाओं को सिद्ध कर सका ।

परन्तु छिन्नमस्ता साधना का अनुभव तो अपने आपमें विचित्र था, इस साधना का प्रारम्भ ही नहीं हो पा रहा था, मैं जब भी इस साधना के लिए तैयार होता तभी कोई न कोई बाधा या परेशानी उपस्थित हो जाती जिसकी वजह से प्रयत्न करके भी मैं साधना में बैठ नहीं पा रहा था ।

कहा जाता है कि साधक जिस दिन से छिन्नमस्ता साधना को सम्पन्न करने का विचार करता है, तभी से उसकी कसौटी की परीक्षा प्रारम्भ हो जाती है, और कोई बिरला ही इस साधना को सम्पन्न कर सकता है ।

परन्तु आज जब मैं इस साधना को भली प्रकार से सम्पन्न कर चुका हूं, तो मैं यह स्वीकार करता हूं कि इससे बढ़ कर और कोई अन्य श्रेष्ठ साधना नहीं है, शास्त्रों में इस साधना के निम्न विशेष गुण बताये गये हैं—

- छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न करने पर आर्थिक दृष्टि से वह पूर्ण समर्थ और सुदृढ़ बन जाता है, मां छिन्नमस्ता स्वयं उसका मनोरथ पूरा करती जाती है, साधक जिस सन्दूक या तिजोरी में धन रखता है उसमें से वह दोनों हाथों से चाहे जितना खर्च करे, उसमें न्यूनता नहीं आती ।
- इस साधना मन्त्र में 'क्लीं' बीज लगता है, जो कि समस्त पापों का नाश करने वाला है, इसलिए यह साधना जीवन के समस्त पापों का नाश कर मुक्ति देने में समर्थ है ।
- इसमें त्रैलोक्य विजयिनी देवी का बीज है, फलस्वरूप ऐसा साधक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता जाता है, वह राजनीति आदि के क्षेत्र में विशेष पूर्णता प्राप्त कर सकता है ।
- इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस साधना के बाद अन्य साधनाएं सुगम और सरल हो जाती हैं, फलस्वरूप उन साधनाओं में जल्दी ही सफलताएं मिलती रहती हैं ।
- इस मन्त्र में माया बीज होने से साधक का शरीर स्वस्थ, सुन्दर और आकर्षक हो जाता है, फलस्वरूप वह जीवन में पूर्णत. यौवनवान बना रहता है ।
- छिन्नमस्ता साधना आठों सिद्धियों और ऋद्धियों को देने में समर्थ है, जो इस साधना को सिद्ध कर लेता है, उसके जीवन में धन, धान्य, पृथ्वी, विलासमय भवन, कीर्ति, दीर्घायु, ख्याति, यश, वाहन, पुत्र, पौत्र और अन्य सभी भौतिक सुख स्वतः ही प्राप्त होते रहते हैं तथा जीवन में उसे किसी प्रकार का अभाव देखने को नहीं मिलता।
- छिन्नमस्ता साधना से सिद्ध व्यक्ति का शरीर लोहे के समान दृढ़ हो जाता है, वह बर्फ में नंगा बैठ कर साधना कर सकता है, अग्नि में प्रवेश कर सकुशल बाहर निकल सकता है और किसी भी प्रकार की विपत्ति को सहन कर सकता है।
- छिन्नमस्ता साधना में त्रिपुर सुन्दरी साधना समाहित है, फलस्वरूप यह इच्छानुसार देवी-देवताओं के साक्षात् दर्शन कर सकता है ।
- इस साधना की विशेषता यह है, कि इसके माध्यम से व्यक्ति को वाक् सिद्धि प्राप्त हो जाती

है, और वह जो भी कहता है, वह सफल हो जाता है।

वास्तव में छिन्नमस्ता साधना में कुछ विशेष साधनाओं का समावेश है, जिससे कि इस एक साधना को करने से कई अन्य साधनाएं सम्पन्न हो जाती हैं।

छिन्नमस्ता साधना का जो स्वरूप पूज्य गुरुदेव ने मुझे स्पष्ट किया वह अत्यन्त ही सरल स्वरूप है, जिसको सिद्ध करने से साधना में सफलता निश्चित रूप से प्राप्त हो जाती है। आगे इस क्रम में यह सरल रूप प्रस्तुत किया जा रहा है और इससे कुछ विशेष नियमों का पालन करना आवश्यक है।

छिन्नमस्ता साधना

छिन्नमस्ता साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है, और यह ध्यान रहे कि रात्रि के प्रथम प्रहर के पश्चात् अर्थात् १० बजे के बाद ही साधना प्रारम्भ करें। क्योंकि अर्द्ध रात्रि का समय इसके लिए सर्वश्रेष्ठ है।

साधना में पूर्ण अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का है और यह साधना ११ अथवा २१ दिन में पूरी अवश्य हो जानी चाहिए। साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें, एक समय सात्विक भोजन ग्रहण करें, यथा सम्भव फलाहार दूध इत्यादि ही लें।

साधना विधान

छिन्नमस्ता साधना कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा से अष्टमी तक किसी भी तिथि को प्रारम्भ की जा सकती है, साधक रात्रि को १० बजे स्नान कर काली धोती धारण कर, काले ऊनी आसन पर बैठें, साधना कक्ष का दरवाजा बन्द कर दें जिससे कि किसी प्रकार का व्यवधान न हो। इस साधना में विशेष रूप से आवश्यक तो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'ह्रीं' बीज मन्त्र सम्पुटित **'छिन्नमस्ता यन्त्र'** तथा प्रामाणिक **'छिन्नमस्ता चित्र'** और **'सिद्ध वज्र वैरोचन'** है। साधना के बाद इस वज्र वैरोचन को काले कपड़े से बांह में बांध लें। मन्त्र जप तुलसी की माला को छोड़ कर किसी भी माला से किया जा सकता है। छिन्नमस्ता साधना में प्रयुक्त माला का प्रयोग विशेष तांत्रिक साधनाओं हेतु ही किया जाना चाहिए।

अपने सामने छिन्नमस्ता चित्र स्थापित कर उसकी पूजा करें, कुंकुम, पुष्प, अक्षत तथा प्रसाद चढ़ाएं, यह प्रसाद प्रतिदिन मन्त्र जप के पश्चात् साधक स्वयं ग्रहण करें किसी अन्य को न दें। पूरे मन्त्र जप के दौरान दीपक एवं धूप लोबान अवश्य ही जलते रहना चाहिए। छिन्नमस्ता चित्र का पूजन करने के पश्चात् आगे दिये गये विधान के अनुसार छिन्नमस्ता यन्त्र का पूजन करें और सिद्ध वज्रवैरोचन के सामने स्थापित कर दें। पूरी साधना में यन्त्र चित्र इत्यादि को हटाना नहीं है, उसी स्थान पर रखे रहें।

विनियोग

ॐ अस्य शिरश्छिन्ना मन्त्रस्य, भैरव ऋषिः, सम्राट् छन्दः, छिन्नमस्ता देवता, ह्रीं ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः अभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि।
सम्राट छन्दसे नमः मुखे।
छिन्नमस्ता देवतायै नमः हृदये।
ह्रीं ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तये नमः।
पादयोः विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास

ॐ आं खड्गाय स्वाहा अंगुष्ठये।
ॐ ईं सुखड्गाय स्वाहा तर्जन्यै।

ॐ ऊं वज्राय स्वाहा मध्यमयोः।
ॐ ऐं पाशाय स्वाहा अनामिकयोः।
ॐ ओं अंकुशाय स्वाहा कनिष्ठिकयोः।
ॐ अः सुरक्ष रक्ष ह्रीं ह्रीं स्वाहा करतल कर-पृष्ठयोः।

अंगन्यास

ॐ आं खड्गाय हृदयाय नमः स्वाहा।
ॐ ईं सुखड्गाय वज्राय शिखायै वषट् स्वाहा।
ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुं स्वाहा।
ॐ ओं अंकुशाय नेत्र त्रयाय वौषट् स्वाहा।
ॐ अः सुरक्ष रक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट् स्वाहा।

इस प्रकार न्यास सम्पन्न करने के बाद हाथ जोड़ कर भगवती छिन्नमस्ता का ध्यान करें—

ध्यान

भास्वन्मण्डल मध्यगांचित शिरश्छिन्नं विकीर्णालिकम्
स्फारास्यंप्रपिद्गलत्स्व-रुधिरंवामे करेविभ्रतीम्।
याभासक्त रति स्मरोपरि गतांसख्यो निजे डाकिनी
वर्णिनयौ परि-दृश्य मोद कलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे।।

मन्त्र

।। श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र वैरोचनीये
हूं हूं फट् स्वाहा ।।

उपरोक्त १६ अक्षरों का छिन्नमस्ता मन्त्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, जिसमें प्रत्येक बीज अक्षर चैतन्य है।

श्रीं—लक्ष्मी बीज
ह्रीं—लज्जा बीज
क्लीं - पापनाशक मनोजव बीज
ऐं संजीवनी विद्या प्रदायक बीज
वं—वरुणदेव बीज मन्त्र
जं—इन्द्र प्रतीक बीज मन्त्र
रं—अग्नि देवता प्रतीक पूर्णता प्रदायक
वं पृथ्वी बीज मन्त्र
एं—त्रिपुर देवी बीज मन्त्र
रं - त्रिपुर सुन्दरी बीजाक्षर
ओं आत्म रूप त्रैलोक्य विजयिनी बीज मन्त्र
चं—चन्द्र प्रतीक
नं—ऋद्धि सिद्धि प्रदायक गणेश प्रतीक
इ—साक्षात् कमला बीजाक्षर
य - सरस्वती बीजाक्षर वाक् सिद्धि प्रदायक
हूं हूं—माया युग्म बीज
स्वां—कामदेव बीज स्वस्थता प्रदायक
हां—रति बीज पौरुष प्रदायक

इस प्रकार इन १६ अक्षरों का विन्यास करने से स्पष्ट होता है कि मन्त्र का प्रत्येक अक्षर विशेष प्रतीक युक्त है जब सवा लाख मन्त्र जप अनुष्ठान पूर्ण हो जाय तब साधक को हवन अवश्य करना चाहिए और आरती आदि सम्पन्न कर मन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न करें।

छिन्नमस्ता साधना में गुरु आशीर्वाद से, गुरु कृपा से साधक सफलता प्राप्त कर जीवन में विशेष सिद्धियों का स्वामी अवश्य ही बन सकता है इसमें साधक को धैर्य और विश्वास से पूरा अनुष्ठान करने की आवश्यकता है। ●

शिवोक्त

महातत्व शतअष्टोत्तरी लक्ष्मी साधना

कथा प्रसिद्ध है कि एक वार भगवान शंकर ने २४ वर्ष की समाधि लगाई और जब उनकी आंख खुली तो उन्होंने अपने आपको श्मशान में ही पाया जहां चारों ओर श्मशान की राख, हड्डियां, जलते हुए शव और सांय-सांय करती हवा थी, एक प्रकार से चारों ओर दरिद्रता का वास था ।

इन सब को देख कर भगवान शंकर अत्यन्त क्षुब्ध हुए और उन्होंने भगवती लक्ष्मी की आराधना और उनकी प्रत्यक्ष प्रसन्नता के लिए १२ वर्ष की समाधि लगाई, १२ वर्ष बाद जब भगवती लक्ष्मी प्रसन्न हुई और प्रत्यक्ष प्रगट हुई तो भगवान शिव ने कहा मैं आपसे कोई ऐसा साधना रहस्य जानना चाहता हूं जो अभी तक गोपनीय रही हो, जिस साधना को करने से आप स्थाई रूप से जन्म-जन्म के लिए घर में निवास करें, किसी प्रकार का कोई अभाव, दुःख दारिद्रय, अकाल मृत्यु या कष्ट न रहे, जीवन में उत्तम पुत्रों की प्राप्ति तथा आनन्द युक्त भोग प्राप्त हो ।

भगवती लक्ष्मी ने उचटती दृष्टि से श्मशान की ओर देखा जहां चारों तरफ भूख और अभाव मंडरा रहा था, भगवान शिव को देखा जिनके शरीर पर भस्म लगी हुई थी और सांप विचरण कर रहे थे, तब भगवती लक्ष्मी ने एक दुर्लभ तथा गोपनीय साधना रहस्य भगवान शिव को बताया और अदृश्य हो गयी ।

इस साधना को सम्पन्न करने से जगत जननी अन्नपूर्णा लक्ष्मी स्वरूप पार्वती से भगवान शिव का विवाह हुआ और ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता गणेश जैसा पुत्र उत्पन्न हुआ, श्मशान वासी रहते हुए भी भगवान शिव त्रैलोक्य सम्पदा के स्वामी बने और रावण आदि साधकों ने शिव को प्रसन्न कर स्वर्णमयी लंका प्राप्त की ।

इस साधना को भगवान शिव के द्वारा करने से ही इस साधना का **"शिवोक्त महातत्व शतअष्टोत्तरी लक्ष्मी साधना"** नाम पड़ा ।

यह साधना पूरे वर्ष में केवल एक बार महालक्ष्मी उत्थापन दिवस के अवसर पर ही सम्पन्न हो सकती है, यह दिवस इस वर्ष ४ सितम्बर को प्रारम्भ हो रहा है, और मात्र तीन दिन में यह साधना सम्पन्न की जाती है, ज्योतिष नियमों के अनुसार भी महालक्ष्मी उत्थापन दिवस भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को है और समापन दिवस भाद्रपद शुक्ल दशमी को है, इस प्रकार यह साधना ४ सितम्बर ९२ शुक्रवार से प्रारम्भ होकर ६ सितम्बर ९२ रविवार को समाप्त हो जाती है, इस साधना को दिन या रात्रि में किसी भी समय सम्पन्न की जा सकती है, पर यदि रात्रि को यह साधना सम्पन्न करें तो ज्यादा उचित रहता है

साधना विधि

पुराणों में वर्णित लक्ष्मी उत्पत्ति से पूर्व भगवती लक्ष्मी को "श्री" कहा गया है, इसलिए यह उच्चकोटि की "श्री" बीज साधना है, ४ सितम्बर की रात्रि को लगभग ९ बजे साधक पूर्ण शुद्धता के साथ स्नान कर सफेद धोती धारण करें और सफेद आसन बिछा कर उस पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठें, सामने भगवती लक्ष्मी का चित्र हो।

इसके बाद तेल का दीपक और घी का दीपक जला कर भगवती लक्ष्मी के चित्र का संक्षिप्त पूजन करें, अर्थात् भगवती लक्ष्मी के चित्र को कुंकुम या केसर अर्पित करें, अक्षत व पुष्प समर्पित करें तथा दूध का बना हुआ प्रसाद अर्पित करें, इसके बाद गुरु के चित्र को सामने रख कर संक्षिप्त गुरु पूजन करें, सर्वप्रथम निम्न चार मन्त्रों से हाथ में जल लेकर आचमन करें —

ह्रीं-आत्म-तत्वाय स्वाहा
ह्रीं-विद्या-तत्वाय स्वाहा
ह्रीं-शिव-तत्वाय स्वाहा
ह्रीं-सर्व-तत्वाय स्वाहा

इसके बाद गुरुदेव को अपने सिर के भीतर स्थित सहस्र दल कमल के बीच में स्थापित कर ध्यान करें और निम्न स्तोत्र उच्चारण करें—

सहस्र-दल पंकजे सकल शील रश्मि प्रभम्।
वराभय-कराम्बुजं विमल-गन्ध पुष्पांम्बरम्॥
प्रसन्न वदनंश्रणां सकल देवता रूपिणम्।
स्मरेत् शिरसि संगं तदभिधान-पूर्व गुरुम्॥१॥
ब्रह्मानन्द परम-सुखदं केवलं ज्ञान-मूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्व-धी-साक्षि-भूतम्।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥२॥
हंसो हंस-गुरुः श्रेष्ठः सुखानन्दः सुखात्मनः।
तस्य स्मरण-मात्रेण मुक्तिस्तत्र न संशयः॥३॥

शतअष्टोत्तरी के पूजा विधान में कुछ विशेष प्रकार से लक्ष्मी का आह्वान और पूजा की जाती है। इस साधना में महालक्ष्मी के जिन १०८ स्वरूपों की साधना की जाती है, उन सभी स्वरूपों में प्रत्येक का पूजन आवश्यक है, इस हेतु **१०८ शिवोक्त लक्ष्मी चक्र** की स्थापना की जाती है। इसके साथ ही **"शिवोक्त महातत्व लक्ष्मी महायन्त्र"** जो कि स्थायी रूप से प्रत्येक लक्ष्मी साधना करने वाले साधक के घर में रहना ही चाहिए, स्थापना करनी ही आवश्यक है। शतअष्टोत्तरी के नाम इस प्रकार है—

१-लक्ष्मी, २-माहेश्वरी, ३-कौमारी, ४-ब्रह्माणी, ५-महामाया, ६-महाविद्या, ७-महायोगा, ८-ऋण-हर्ता, ९-सिद्धिदेवी, १०-जया, ११-विजया, १२-आनन्दा, १३-सर्व मंगला, १४-विलासी, १५-ईश्वरी, १६-शुभगा, १७-कुलदेवी, १८-विष्णु-प्रिया, १९-पद्मावती, २०-पद्मनेत्रा, २१-मातंगी, २२-दिनेश्वरी, २३-उमा, २४-सुकेशी, २५-जलोदरी, २६-विभूषणा, २७-मोक्षदा, २८-कामदायिनी,

२९-भोगदा, ३०-सुरारि, ३१-वत्सला, ३२-विद्या, ३३-पापनाशिनी, ३४-क्षयकरी, ३५-तेजस्विनी, ३६-शम्भुरूपा, ३७-भाग्यजननी, ३८-भाग्यदेवी, ३९-भाग्यरूपिणी, ४०-भाग्या, ४१-भीतनाशिनी, ४२-भुवना, ४३-भुवनानन्द कारिणी, ४४-मुक्तिदा, ४५-भोगरक्षिणी, ४६-भोगेश्वरी, ४७ भोगस्था, ४८-भोगवती, ४९-भूधरा, ५०-भोगविलासिनी, ५१-भव्या, ५२-भव्यतरा, ५३-भव वल्लभा, ५४-भास्करा, ५५-उदया, ५६-दिव्या, ५७-चक्रिणी, ५८-भव नाशिनी, ५९-भवाब्धि करणी, ६०-सुख-वर्द्धिनी, ६१-कार्य करणी, ७२-करुणानिधि, ६३-काल शमनी, ६४-वरदायिनी, ६५-नित्या, ६६-निशा, ६७-काम्या, ६८-कला, ६९-शुभदायिनी, ७०-सकलानन्दा ७१-सकलाकला, ७२-सकलासिद्धि, ७३-सकलानिधि, ७४-सकलसारा, ७५-सकलार्थदा, ७६-भवनामूर्ति, ७७-भवनाकृति, ७८-भवनाभव्या, ७९-मदनारूपा, ८०-मदनातुरा, ८१-मदनेश्वरी, ८२-भाग्यरचना, ८३-भाग्यदाकूला, ८४-भाग्य-विरता, ८५-भाग्यसंचिता, ८६-भाग्यसुपथा, ८७-भाग्यसुप्रदा, ८८-भोगसम्प्रदा, ८९-भोग-गुम्फिता, ९०-भोगयोगिनी, ९१-भोगरसना, ९२-भोगरंजिता, ९३-भोगविभवा, ९४-भोगवरदा, ९५-भोगकुशला, ९६-भद्रा, ९७-भद्रेश्वरी, ९८-भद्र-क्रिया, ९९-भद्रक्रीड़ा, १००-भद्रविद्या, १०१-मंगलदा १०२-भवदानन्दलहरी, १०३-भवदानन्ददायिनी, १०४-शिवदा, १०५-महामाया, १०६-कुबेरा, १०७-गुरु प्रिया, १०८-भाग्य भविता ।

साधना के विशेष विधान के अन्तर्गत इन सभी लक्ष्मियों का आह्वान तथा पूजन करना है जो १०८ लक्ष्मी चक्र सामग्री में हैं, उनमें से एक-एक लक्ष्मी चक्र लेकर अपने सामने स्थापित करना है, उस पर कुंकुम तथा चन्दन की टीकी लगानी है तथा हाथ जोड़कर निम्न क्रमानुसार आह्वान एवं पूजन करना है —

ॐ लक्ष्मीं आवाहयामि । ॐ लक्ष्म्यै नमः ।
ॐ माहेश्वरीं आवाहयामि । ॐ माहेश्वर्यै नमः ।
ॐ कौमारीं आवाहयामि । ॐ कौमार्यै नमः ।

इस प्रकार सभी १०८ लक्ष्मियों का आह्वान करना है, इस साधना में इन १०८ मन्त्रों से सिद्ध विशिष्ट शांकरी माला से ही मन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न करना है ।

इस माला को अपने हाथ में लेकर निम्न मन्त्र से माला को प्रणाम करें—

माले माले महा-माये सर्व शक्ति स्वरूपिणी ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तः तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥

माला को प्रणाम कर फिर इस साधना को सम्पन्न करने के लिए साधक आसन पर खड़ा हो जाय और एक पात्र में तेल का दीपक रख कर बाएं हाथ में लें तथा दाहिने हाथ से उपरोक्त माला के द्वारा पांच माला निम्न मूल मन्त्र का जप करें, यह साधना आसन पर खड़े-खड़े ही सम्पन्न की जाती है ।

शांकरी माहात्म्य षोडशी इष्ट लक्ष्मी मन्त्र

॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं आगच्छ वरद
शांकरे श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ॐ ॥

इस प्रकार जब पांच माला मन्त्र जप हो जाय तो साधक दीपक को अपने स्थान पर रखें और आसन पर बैठ कर लक्ष्मी यन्त्र तथा माला को प्रणाम करें तथा माला यथा स्थान रख दें ।

इस प्रकार तीन दिन तक यही प्रयोग अर्थात् प्रतिदिन पांच माला मन्त्र जप करना है, इसके साथ ही एक अमृत
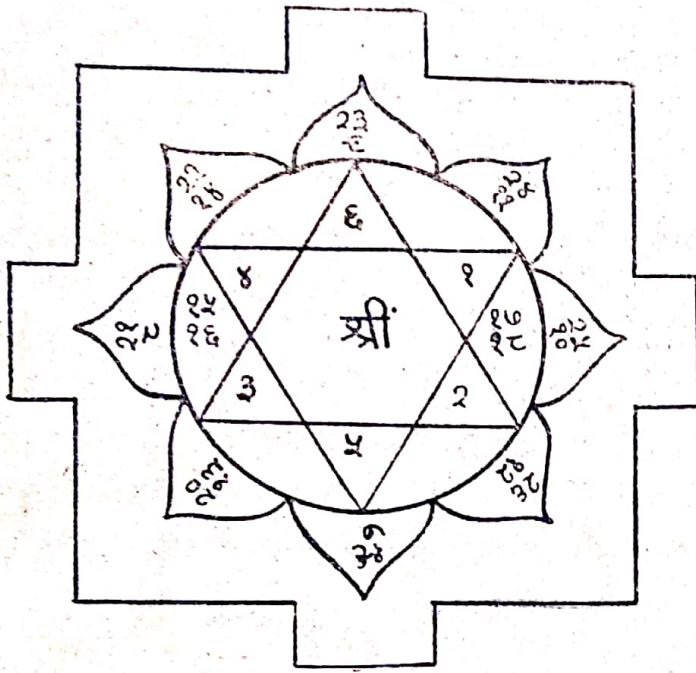
पान का विशेष अनुष्ठान भी प्रतिदिन सम्पन्न किया जाता है, इसमें सद्गुरुदेव में भगवान शंकर की प्रतिमूर्ति देखते हुए यह कार्य सम्पन्न करना है।

सामने रखे जलपात्र में से थोड़ा जल गुरु चरण कमलों का ध्यान करते हुए एक अन्य पात्र में डालें तथा गुरु मन्त्र का जप करें। यह मन्त्र जप करते समय १०८ बार किसी चम्मच द्वारा मूल ताम्रपात्र में से जल लेकर दूसरे पात्र में डालना तत्पश्चात् मूल जलपात्र (कलश) में रखे हुए जल को अपने हाथ में लेकर निम्न मन्त्र का जप कर अमृत पान करना है। इसमें चार मन्त्र हैं और इन चारों मन्त्रों को शुद्ध रूप में पढ़ते हुए यह प्रक्रिया सम्पन्न करनी है—

१- ह्रीं श्रीं शिव शक्ति सदाशिवेश्वर विद्या कलात्मने अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ऐं (मूलं) आत्म तत्वेन स्थूलदेहं शोधयामि स्वाहा।

२- ह्रीं श्रीं माला कला विद्या राग कला नियतिपुरुषात्मने कं खं गं घं ङं चं छं जं झं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं क्लीं (मूल) विद्या तत्वेन सूक्ष्म देहं शोधयामि स्वाहा।

३- ह्रीं श्रीं प्रकत्यहंकार बुद्धि-मनः श्रोत्र त्वक् चक्षु जिह्वा-प्राण-वाक्-पाणि-पादपायूस्थ शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धाकाश-वायग्नि-सलिल भूम्यात्मने यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं सौः (मूल) शिव तत्वेन पर देहं शोधयामि स्वाहा।

४- ह्रीं श्रीं शिव-शक्ति सदाशिवेश्वर-विद्या-कलात्मने माया-कला-विद्या-राग-काल नियति-पुरुषात्मने प्रकृत्यहंकार- बुद्धि-मनः श्रोत्र-त्वक्-चक्षु जिह्वा-घ्राण-वाक्-पाणि-पाद-पायूस्थ शब्द स्पर्श रूप-रस-गन्धांश वायग्नि-सलिल भूम्यात्मने अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ऐं क्लीं सौः (मूल) सर्व-तत्वेन तत्व-त्र्यान्वित बीजं शोधयामि स्वाहा।

इस प्रकार अमृत पान अनुष्ठान तीनों दिन तक संपन्न करना है, जब तीन दिन का यह अनुष्ठान पूर्ण हो जाय तो चौथे दिन प्रातः लक्ष्मी आरती सम्पन्न करें। पांच कुंवारी कन्याओं को भोजन कराएं और दक्षिणा दें। पूरे साधना के समय दीपक पूरे समय तक निरन्तर अवश्य ही जलते रहना चाहिए। साधना में प्रयुक्त शांकरी माला को विशेष लक्ष्मी साधनाओं हेतु ही प्रयोग में लाएं।

लक्ष्मी साधना का यह विशिष्ट अनुष्ठान हर दृष्टि से सरल एवं विशेष फलदायक है।

काली जयन्ती — (१६-६-६२)

जीवन संवारना है तो सम्पन्न कीजिए

महा चण्डी दिव्य अनुष्ठान

दुर्गा साधना के सम्बन्ध में कई ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, लेकिन विशेष बात यह है कि यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण तांत्रोक्त ग्रन्थ है, इस ग्रन्थ की थाह पा लेना असम्भव है। पूज्य गुरुदेव के शिष्यों में दुर्गा महाकाली के साधक विशेष रूप से हैं, उन सबके अनुरोध पर पूज्य गुरुदेव ने महाकाली चण्डी साधना का विशेष अनुष्ठान प्रदान किया वह अक्षरशः प्रस्तुत किया जा रहा है—

जब तक साधक साधना में लीन नहीं हो जाता अपने आपको पूर्ण समर्पण भाव से डुबा नहीं लेता, तब तक साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती है, कुछ अनुभूतियां साधकों को बीच-बीच में होती हैं और प्रभाव भी देखने को मिलता है, लेकिन यह अनुभूतियां इतनी क्षीण होती हैं कि साधक शका आशंका से घिरा रहता है।

भगवती दुर्गा की साधना में समर्पण भाव और जिस रूप से अनुष्ठान सम्पन्न करना है उसी रूप में होना आवश्यक है, मन्त्र शुद्धि, प्राण प्रतिष्ठा, मन्त्र सख्या, पूजन क्रम सभी बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। जो साधक साधना में सिद्धि हेतु 'शॉर्टकट' मार्ग चाहता है, वह कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। जीवन की कुछ विशेष भौतिक बाधाएं, ग्रहों का दोष, दरिद्रता,

मुकदमा, विवाह में रुकावट, रोजगार, कारोबार में बाधा इत्यादि जीवन को कष्टमय बना देते हैं और मेरी यह बात निश्चित मान लीजिए कि जीवन में बाधाओं को हटाने के लिए महादुर्गा का अनुष्ठान व साधना करने के अलावा निश्चित कोई उपाय नहीं है। दुर्गा तो बाधा-हारिणी, शक्ति प्रदायक है, और जहां शक्ति है वहां जान लीजिए कि सब कुछ है।

चण्डी साधना

चण्डी साधना जो साधक सम्पन्न करता है, उस साधक का स्वरूप ही बदल जाता है, उसकी विचार शक्ति सकारात्मक रूप से कार्य करने लग जाती है और जैसे-जैसे मन्त्र जप अनुष्ठान बढ़ता है, वैसे-वैसे वह नवीनता, दिव्यता अनुभव करता है। चण्डी साधना का यह विशेष अनुष्ठान इस महत्वपूर्ण काली जयन्ती के अतिरिक्त जब भी रवि पुष्य हो, नवरात्रि हो, ग्रहण योग हो, दीपावली का पर्व हो तब भी इसे सम्पन्न किया जा सकता है।

इस साधना का विशेष विधान है और उसे उसी रूप में सम्पन्न करना चाहिए, मूल प्रयोग ११ दिन का है, कुछ पुस्तकों में इसे बढ़ा कर २१ तथा ४१ दिन का कर दिया गया है। साधना में मूल यन्त्र के अलावा ग्यारह दिन प्रतिदिन अष्टगन्ध से नवीन यन्त्र का निर्माण कर उसकी प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न की जानी आवश्यक है। और यह यन्त्र निर्माण किसी भी कागज पर, भोज पत्र पर अथवा रजतपत्र पर बनाया जा सकता है। यन्त्र निर्माण हेतु जो अष्ट गन्ध का प्रयोग किया जाता है, उसमें आठ वस्तुएं - चन्दन, अगर, केसर, कुंकुम, गोरोचन, शिलारस, जटामासी तथा कपूर इनको पीस कर यन्त्र निर्माण हेतु स्याही बनाई जाती है। साधना के दौरान संयमित जीवन सात्विक भोजन और भूमि शयन निश्चित रूप से आवश्यक है।

चण्डी साधना अनुष्ठान में विशेष ध्यान रखने योग्य बात यह है कि साधक अपनी साधना तथा अपनी मनोकामना दोनों को ही गुप्त रखें।

इस साधना में नवार्ण मन्त्र सिद्ध **'चण्डी यन्त्र'** जो कि ताम्र पत्र पर अंकित होता है, की स्थापना आवश्यक है, इसके साथ यन्त्र के दोनों ओर **'गणपति चक्र'** तथा **'गायत्री चक्र'** की स्थापना अवश्य करें।

साधक को जो प्रतिदिन नवीन यन्त्र बनाना है, उसका चित्र नीचे दिया हुआ है जो ताम्र पत्र पर अंकित चण्डी यन्त्र स्थापित है वह तो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त है लेकिन साधक को अपने बनाये गये यन्त्रों की नित्य प्राण प्रतिष्ठा करना आवश्यक है।

इसके साथ ही पूजा में जलपात्र, गंगाजल, धूप, दीप, दूध, घी, पुष्प, शहद, चन्दन, अक्षत, मिष्ठान प्रसाद, सुपारी, फल आवश्यक है।

साधना विधान

अपने सामने एक लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर लाल वस्त्र बिछा दें और उसके मध्य में दो थाली रखें एक थाली में ताम्रपत्र अंकित प्राण प्रतिष्ठा युक्त **चण्डी यन्त्र** स्थापित कर यन्त्र के आगे उसी थाली में **गणपति चक्र** तथा **गायत्री चक्र** स्थापित कर दें। धूप दीप जला दें तथा दूसरी थाली में अष्टगन्ध से नीचे दिये गये चित्र के अनुसार यन्त्र बना कर पूजन कार्य प्रारम्भ करें।

	ओं	ऐं	ओं	
ओं	१	९	१०	ओं
श्रीं	१४	७ २ ओं ३ ८	६	क्लीं
ओं	५	११	४	ओं
	ओं	क्लीं	ओं	

प्राण प्रतिष्ठा

अपना बायां हाथ हृदय पर रखें तथा दाहिने हाथ में पुष्प लेकर यन्त्र को स्पर्श करें तथा निम्न मन्त्र को जोर से बोल कर अवश्य पढ़ें।

औ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं मम प्राणाः इह प्राणाः ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं सर्व-इन्द्रियाणि इह मम ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं मम वाक्-मन-चक्षु-श्रोत्र-जिह्वा घ्राण प्राणा इहागत्य सुख चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इसके पश्चात् सर्वप्रथम गणपति पूजन एवं गुरु पूजन सम्पन्न करें, गणपति पूजा स्थापित किये गये गणपति चक्र से करें, तथा गुरु चित्र स्थापित कर गुरु पूजन सम्पन्न करें।
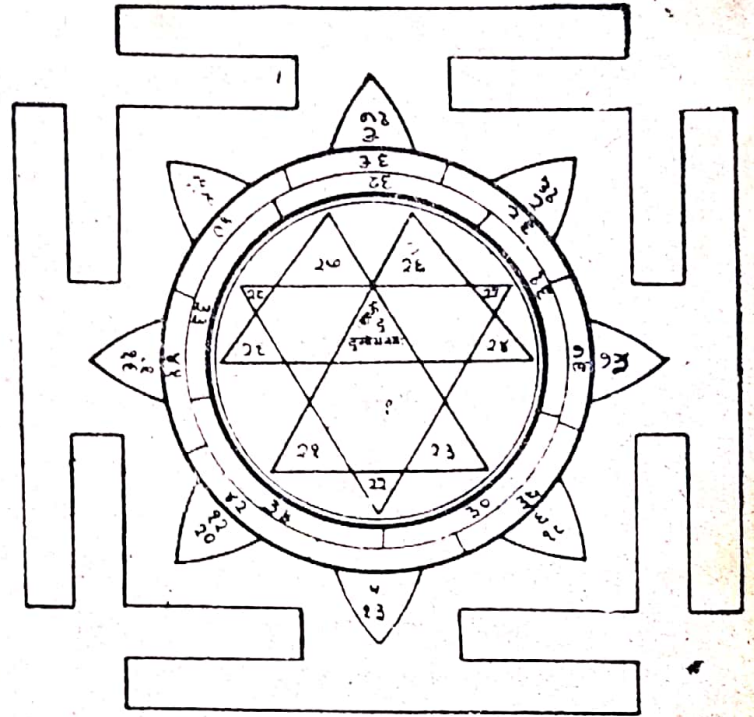
अब सामने दोनों थालियों मे रखे हुए यन्त्रों की पूजा करें, यह पूजा क्रम निम्न प्रकार से रहेगा—

समर्पण मन्त्र

पाद्यं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः

अर्घ्यं	,,	,,	,,
आचमनं	,,	,,	,,
गंगाजलं	,,	,,	,,
दुग्धं	,,	,,	,,
घृत	,,	,,	,,
तरु पुष्पं	,,	,,	,,
इक्षु क्षरं	,,	,,	,,
पंचामृतं	,,	,,	,,
गन्धं	,,	,,	,,
अक्षतान्	,,	,,	,,

दुर्गा यन्त्र

पुष्प मालां	,,	,,	,,
मिष्ठान्न	,,	,,	,,
द्रव्यं	,,	,,	,,
धूपं	,,	,,	,,
दीपं	,,	,,	,,
पूंगी-फलं	,,	,,	,,
फलं	,,	,,	,,
दक्षिणां	,,	,,	,,

इन मन्त्रों में जिन-जिन वस्तुओं का नाम आया है, वे वस्तुएं अर्पित करते हुए पूजन करना है। तत्पश्चात् दोनों यन्त्रों पर पुष्प चढ़ाएं।

अब साधना का सबसे मूल क्रम प्रारम्भ होता है, इस क्रम में सबसे पहले एक माला गणपति मन्त्र का जप करें—

गणपति मन्त्र

॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥

तत्पश्चात् एक माला गायत्री मन्त्र का जप करें, और इसके बाद मूल मन्त्र का जप ५१ बार या १०८ बार अवश्य करें। इस चण्डी मन्त्र जप में समय अवश्य लगेगा लेकिन साधक शान्त रूप से पूर्ण मन्त्र जप अवश्य सम्पन्न करें।

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

चण्डी अनुष्ठान मन्त्र

ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ओं ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥

कुंजिका स्तोत्र

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधु-मर्दिनी।
नमः कैटभ हारिण्यै नमस्ते महिषा-मर्दिनी।
नमस्ते शम्भु हन्त्र्यै च निशुम्भासुर-घातिनी।
जाग्रतं हि महादेवि! जप सिद्धि कुरुष्व मे ॥
ऐंकारी सृष्टि रूपायै ह्रींकारी प्रति-पालिका।
क्लींकारी काम-रूपिण्यै बीज-रूपे! नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकरी वर-दायिनी।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्र रूपिणी।
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका-देवि! शां शीं शूं मे शुभं कुरु।
हुं हुं हुंकार-रूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे! भवान्यै ते नमो नमः।
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं।
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।
पां पीं पूं पार्वति! पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।
सां सीं सूं सप्तशती-देव्या मन्त्र सिद्धिं कुरुष्व मे।

इदं तु कुंजिक-स्तोत्रं मन्त्र जागर्ति हेतवे, अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति! यस्तु कुंजिकया देवि! हीनां सप्तशतीं पठेत् न तस्य जायते सिद्धिर अरण्ये रोदनं यथा।

अब कागज पर लिखे यन्त्र को अपने नेत्रों मे लगाएं तथा नमस्कार कर निम्न मन्त्र पढ़ें –

एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्व मान्यो भविष्यसि, सर्व रूप मयी देवी सर्व-देवी-मयं जगत्, अतोऽहं विश्व-रूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।

प्रत्येक दिन के पूजा किये हुए यन्त्र को लाल कपडे में बांध कर अलग रख दें, दूसरे दिन पूजा के समय नये यन्त्र का निर्माण कर इसी क्रम से पूजा सम्पन्न करें। ग्यारहवें दिन पूजा सम्पन्न करने के पश्चात् साधक इन सभी कागज पर अंकित यन्त्रों को ताबीजों में डाल कर बन्द करवा कर प्रथम यन्त्र स्वयं गले में अथवा बांह पर धारण करें बाकी यन्त्र अपने परिवार के सदस्यों में अथवा जनहितार्थ किसी पीड़ित व्यक्तियों को दे दें।

ताम्रपत्र पर अंकित यन्त्र को अपने पूजा स्थान में प्रमुख स्थान पर रखें और अपने नित्य प्रति की पूजा में नमस्कार करते हुए अगरबत्ती, दीपक अवश्य जलाएं।

यह विशेष तांत्रिक अनुष्ठान आस्थावान साधकों के लिए पूर्ण सफलता कारक एवं शीघ्र फलदायक है। जीवन में कभी भी कोई संकट उपस्थित हो तो उस समय भी साधक यदि स्नान कर इस यन्त्र का निर्माण कर विशेष चण्डी मन्त्र का ११ बार उच्चारण कर ले तो भी संकट टल जाता है। ●

सुधरेगा जीवन : ग्रह दोष निवारण से

नवग्रह उपासना

प्रत्येक राशि का स्वामी कोई न कोई ग्रह होता है। जन्म कुण्डली में जब कोई ग्रह खराब स्थान में बैठ कर विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है तब मानव को कष्ट, पीड़ा और दुःख भोगना पड़ता है। जीवन में सुख-दुःख, लाभ-हानि आदि इन्हीं ग्रहों पर आधारित होते हैं। इन ग्रहों की शान्ति के लिए उनकी उपासना करना चाहिए। प्रस्तुत है इस लेख में नवग्रह उपासना पद्धति—

भारतीय संस्कृति में नवग्रह उपासना का उतना ही महत्व है जितना कि भगवान विष्णु, शिव या अन्य देवताओं की उपासना का। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जितने भी उपनयन, विवाह आदि संस्कार होते हैं, इन सब में नवग्रहों का विशेष महत्व है। किसी भी प्रकार का यज्ञ नवग्रह स्थापन के बिना अपूर्ण रहता है, क्योंकि यज्ञ की रक्षा नवग्रह के माध्यम से ही होती है। इसलिए गणेश आदि की स्थापना के साथ ही साथ नवग्रह की भी स्थापना होनी आवश्यक है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुल १२ राशियां होती हैं और प्रत्येक राशि का स्वामी कोई न कोई ग्रह होता है। मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी–मंगल, वृष और तुला का स्वामी–शुक्र, कन्या और मिथुन का–बुध, कर्क का-चन्द्रमा, सिंह का—सूर्य, धनु और मीन का—गुरु तथा मकर और कुम्भ राशियों का स्वामी शनि है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष की मानी गयी है, इसमें से सूर्य की दशा छः वर्ष, चन्द्रमा की दस वर्ष, मंगल की सात वर्ष, राहु की अठारह वर्ष, गुरु की सोलह वर्ष शनि की उन्नीस वर्ष, बुध की सत्रह वर्ष, केतु की सात वर्ष और शुक्र की बीस वर्ष मानी गयी है। जन्मकुण्डली के अनुसार जब कोई ग्रह खराब स्थान में बैठ कर विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है तब मानव को पीड़ा, कष्ट और दुःख भोगने के लिए विवश होना पड़ता है।

यदि पाठक चाहें तो वे स्वयं सम्बन्धित ग्रह का मन्त्र जप कर सकते हैं बीज मन्त्र के जप करने से विपरीत ग्रहों के प्रभाव में न्यूनता आती है और वे अनुकूल फल देने

लगते हैं।

नीचे मैं प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित मन्त्र बीज मन्त्र, तथा जप संख्या का विधान स्पष्ट कर रहा हूं।

१-सूर्य

(मण्डल के मध्य में लाल गोलाकार)

मन्त्र-ॐ आं कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥
सूर्याय नमः॥

बीज मन्त्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

जप संख्या-७००० ।

समय-उदय काल।

२-चन्द्रमा

(अग्नि कोण में श्वेत अर्द्ध चन्द्र)

मन्त्र-ॐ इमं देवाअसपत्न सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्योन्द्रियाय इममुष्य पुत्रमुष्ये पुत्रमस्यै विश एष वो भी सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां राजा। सोमाय नमः।

बीज मन्त्र-ॐ श्रीं श्रो सः चन्द्राय नमः।

जप संख्या-११००० ।

समय-संध्या काल।

३-मंगल

(दक्षिण में लाल त्रिकोण)

मन्त्र-ॐ अग्नि मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतां सि जिन्वति। भौमाय नमः।

बीज मन्त्र-ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

जप संख्या-१०००० ।

समय-सूर्योदय के दो घटी बाद से।

४-बुध

(ईशान कोण में हरा बाण)

मन्त्र-ॐ उदबुध्यस्वग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजयेथामयं च अस्मिन्सघस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत। बुधाय नमः।

बीज मन्त्र-ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

जप संख्या-१६००० ।

समय-सूर्योदय के ५ घटी बाद से।

५-गुरु

(उत्तर में पीला अष्टदल)

मन्त्र ॐ बृहस्पते अति यदयो अर्हाद् द्युमद् विभाति ऋतुमज्जनेषु। यद्दीदयक्षवस ऋतुप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। बृहस्पतये नमः।

बीज मन्त्र-ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

जप संख्या १६००० ।

समय-संध्याकाल

६-शुक्र

(पूर्व में श्वेत पंचकोण)

मन्त्र-ॐ अन्नात्पुरिश्रुतो रस ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रं पयः सोम प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्योन्द्रियमिद पयोऽमृतं मधु। शुक्राय नमः।

बीज मन्त्र-ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

जप संख्या-६००० ।

समय-सूर्योदय।

७-शनि

(पश्चिम में काला मनुष्य)

मन्त्र-ॐ शं नो देवी र भिष्टय आपो भवन्तु पीतये शं यो रभि स्रवन्तु नमः। शनैश्चराय नमः।

बीज मन्त्र-ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

जप संख्या-२३००० ।

समय संध्या काल

८-राहु

(नैर्ऋत्य कोण में काला मकर)

मन्त्र-ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया षश्चिष्टया वृता। राहवे नमः।

बीज मन्त्र-ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं राहवे नमः।

जप संख्या–१८०००।

समय–रात्रि काल।

९-केतु

(वायव्य कोण में काला ध्वजा)

मन्त्र-ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः। केतवे नमः।

बीज मन्त्र-ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः

जप संख्या–१७०००।

समय–रात्रि काल।

विधान

शास्त्रों के अनुसार सर्वप्रथम ग्रह शान्ति हेतु जिस ग्रह की उपासना करनी हो, उसका बीज मन्त्र लिख कर उसका पूजन किया जाना चाहिए और उसके बाद मन्त्र जप करना चाहिए।

प्रत्येक साधक या पाठक किसी न किसी क्रूर ग्रह से प्रभावित रहता ही है, मंगल, शनि और राहु क्रूर ग्रह माने गये हैं तथा सूर्य और केतु विपरीत फल देने में विशेष सहायक होते हैं।

इन ग्रहों के प्रभाव से बाधाएं, मानसिक परेशानियां, कार्य में विलम्ब, असफलता, मान हानि, आर्थिक क्षति, बीमारी और कई प्रकार की समस्याएं, नित्य पैदा होती रहती हैं। जब इस प्रकार की स्थिति देखें तो यह जान लें कि किसी न किसी क्रूर या पापी ग्रह का प्रभाव आपको विपरीत फल दे रहा है। अतः बुद्धिमानीपूर्वक इसका शमन कर लेना चाहिए।

सर्व सुलभ विघ्नहर नवग्रह यन्त्र

जब जीवन में जरूरत से ज्यादा बाधाएं एवं अड़चनें अनुभव होती हैं, तब इस प्रकार का यन्त्र धारण कर लेना चाहिए। यह यन्त्र प्रत्येक प्रकार के विपरीत ग्रहों के प्रभाव को दूर करने में समर्थ होता है।

अनुभव में यह आया है कि **'विघ्नहर नवग्रह यन्त्र'** प्रत्येक बालक, पुरुष और स्त्री के लिए आवश्यक है। पति की उन्नति एवं सुखमय गृहस्थ जीवन के लिए भी यह यन्त्र प्रत्येक स्त्री के लिए आवश्यक माना गया है। यदि बालिका का विवाह नहीं हो रहा हो, या सगाई-विवाह में बाधाएं आ रही हों तो उसके लिए भी यह यन्त्र विशेष अनुकूल कहा जाता है। यदि घर में बीमारियों और परेशानियों ने डेरा जमा रखा हो तो यह यन्त्र तुरन्त धारण कर लेना चाहिए। यों भी मेरे अनुभव से प्रत्येक पुरुष, स्त्री और बालक को यह यन्त्र धारण किये रहना चाहिए, जिससे कि उसे जीवन में विशेष बाधाओं का सामना न करना पड़े।

यह यन्त्र अत्यन्त प्रभाव पूर्ण है। इसको धारण करने के बाद किसी प्रकार की उपासना, जप आदि या रत्न धारण करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

आजकल रत्न अत्यन्त मंहगे हो गये हैं और उनकी परीक्षा और प्रामाणिकता सदिग्ध हो गई है। ऐसी स्थिति में यह यन्त्र विशेष कारगर है और यह पूरे जीवन भर के लिए अनुकूल बना रहता है।

सुश्रुत के अनुसार बालकों पर आक्रमण करने वाले नव बाल ग्रह और हैं। ये दिव्य देह विशिष्ट हैं, इनमें से कुछ पुरुष हैं और कुछ स्त्रियां हैं, इनके नाम हैं—

१-स्कन्द, २-स्कन्दापस्मार, ३-शकुनी ग्रह, ४-पूतना ग्रह, ५-अन्धपूतना ग्रह ६-शीतपूतना, ७ रेवती ग्रह, ८-मुखमन्तिक ग्रह और ९ नेगम ग्रह।

इस यन्त्र को रविवार के दिन धूप देकर पुरुष को दाहिनी भुजा पर तथा स्त्री को बायीं भुजा में बांध देना चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार का धागा प्रयोग किया जा सकता है। बालकों को यह यन्त्र गले में पहिनाना चाहिए। ●

गुरुदेव की डायरी से

पूज्य गुरुदेव सदैव नवीनता की खोज में और विभिन्न साधनात्मक प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु आत्म-विश्लेषण करते रहते हैं, अपने साधनात्मक जीवन में और उसके बाद भी डायरी लिखने की उनकी विशेष आदत रही है, इसी डायरी में से कुछ चुने अंश दिये जा रहे हैं, इसमें कई प्रसंग ५० वर्ष से भी अधिक समय पहले लिखे हुए हैं।

विश्वास

विश्वास से ही शक्ति का विकाश होता है, सहज शक्ति न होने पर भी विश्वास के बल से साधक कभी-कभी अभीष्ट शक्ति प्राप्त कर लेता है। शक्ति को और शक्तिमान को प्रत्यक्ष देख लेने पर जो व्यक्ति इस विश्वास अविश्वास में डूबा रहता है कि क्या वे (शक्तिमान) मेरा उद्धार करेंगे या नहीं, संदेह के घेरे में घिरा रहता है, अविश्वास का दूसरा नाम ही परीक्षा है, और जो साधक परीक्षा करता है वह परमतत्व प्राप्त नहीं कर सकता, प्रभु कृपा तो केवल विश्वास से ही प्राप्त हो सकती है।

जागृति

जिस प्रकार सूर्योदय के साथ आकाश प्रकाशमान होने लगता है, उसी प्रकार देवत्व जागृत होने पर चित्त रूपी आकाश प्रकाशमान होने लगता है, और यह केवल देव ज्योति से ही सभव होता है, इसलिए जो कहता है कि चित्त शुद्ध करके देव दर्शन प्राप्त होता है, वह गलत है, क्योंकि चित्त शुद्धि तो देव कृपा से ही संभव होती है। सद्‌गुरु की सामान्य कृपा के प्रभाव से साधक के हृदय का अंधकार कट जाता है और भीतर ही भीतर देव सूर्य प्रकट होते हैं लेकिन जिस प्रकार सूर्य के आगे बादल छाये रहने से थोड़ा अंधकार रहता है, उसी प्रकार इस देह के कारण, आस-पास के वातावरण के कारण वह गुरु कृपा अनुभव नहीं कर पाता है। इस अंधकार को साधनात्मक कार्यों द्वारा दूर कर ही साधक पूर्ण अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

गुरु कृपा

विश्वास-भाव भरे शिष्य को पहले प्राप्त होती है-साधारण कृपा, और यह कृपा ज्ञान बीज संचार से प्रारम्भ होती है, इसी का नाम आज्ञा पालन है, इसके लिए नियमों का पालन करना पड़ता है, इस अवस्था में गुरु वाक्य ही आज्ञा अथवा नियम समझना चाहिए और इसके पालन का नाम कर्म, यह करते-करते कर्म कट जाता है तब पूर्ण ज्ञान की स्थिति आती है, उस समय सद्‌गुरु की असाधारण कृपा का उदय होता है और यही इच्छा शक्ति की अवस्था है। ★

गुरु सेवा परमो धर्मः

एक अनूठी योजना के क्रम में

पिछले माह जून अंक में पूज्य गुरुदेव के आदेश से शिष्यों को एक विशेष कार्य सौंपा गया था, जिसमें पत्रिका प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध में एक विशेष योजना थी।

इस योजना का प्रारूप पूज्य गुरुदेव की सहमति से ही बनाया गया था और इस योजना के सम्बन्ध में कई शिष्यों ने आपस में विचार-विमर्श कर प्रस्तुत किया। इस योजना में एक आपसी विश्वास और स्नेह की बात थी जिसके अन्तर्गत शिष्यों को अपनी दिनचर्या में प्रतिदिन नियमित रूप से कुछ कार्य करना था। जो कार्य-कर्त्ता होते हैं, व्यावहारिक रूप में कई कठिनाइयां उनके मार्ग में आती हैं, समाज की जो वर्तमान स्थिति है उसमें आलोचना परनिन्दा का भाव अत्यधिक बढ़ गया है, सकारात्मक आलोचना की जगह निराधार आलोचना व्यक्तिगत चरित्र हनन ने ले लिया है। जो लोग संस्कृत का एक शब्द नहीं जानते, जिन्होंने कभी एक स्थान पर बैठ कर पांच मिनट भी ध्यान नहीं किया जिन्होंने अपने जीवन में माला को हाथ नहीं लगाया, जिन लोगों ने साधना शब्द के अर्थ को ही नहीं समझा जो केवल अपने स्वार्थ चिन्तन के एक घेरे में बंधे रहते हैं, वे लोग जब हमारी हजारों-हजारों वर्ष पुरानी परम्परा-मन्त्र ज्ञान, साधना साहित्य, भक्ति और शक्ति तत्व की आलोचना करते हैं तो उन पर बड़ी ही दया आती है। इन पर क्रोध करने से कोई लाभ भी नहीं है।

जिस प्रकार एक हठी बालक निरर्थक प्रश्न पर प्रश्न, तर्क पर तर्क करता है, यही स्थिति इन अज्ञानियों को है। जिस प्रकार एक पिता अपने बालक को शान्त रूप से समझाता है, उसकी शकाओं का समाधान करता है, उसी प्रकार जीवन मार्ग में खोये इन व्यक्तियों को हमें भी मार्ग दिखाना है, उनके तर्कों को ध्यान पूर्वक सुनना है और उनकी शंकाओं का समाधान करना है। सच्चा साधक कभी निरर्थक क्रोध नहीं करता, क्रोध से साधना की शक्ति ही क्षीण होती है वह अपने मार्ग से भटक सकता है।

सिद्धाश्रम साधक परिवार

पत्रिका का प्रत्येक सदस्य **सिद्धाश्रम साधक परिवार** का सदस्य है, सब एक दूसरे से जुड़े हैं, एक मित्रता का भाव है, यह एक ऐसी संस्था है, जिसमें न कोई राजनीति है न कोई उठा पटक, जब भी दो गुरु भाई एक दूसरे से मिलते हैं तो एक अपार प्रसन्नता का अनुभव करते हैं, यह अपने आपमें बहुत बड़ी बात है, आजकल धार्मिक संस्थाओं में जो स्थितियां हैं, जिस प्रकार गद्दी के लिए, नाम के लिए तथाकथित साधु-महात्मा लोग झगड़ते हैं, गद्दियों के लिए कोर्ट में मुकदमे होते हैं, उस स्थिति को देख कर लगता है कि हमारे इस **सिद्धाश्रम साधक परिवार** का भाईचारा, आपसी समझ और गुरुदेव का ज्ञान और उनका वरदहस्त कितना महान है।

गुरु सेवा योजना

पिछले महीने जून अंक में जो गुरु सेवा योजना प्रकाशित हुई थी, जिसके अन्तर्गत पत्रिका सदस्य, शिष्य द्वारा २५ अंक मंगाये जाने पर कार्यालय द्वारा बिना कोई धनराशि जमा किये संबंधित शिष्य को भेजना था, इन पत्रिकाओं को नये सदस्य बना कर योग्य व्यक्तियों को बांटना था और शुल्क के रूप में २५०)रु० की जगह कार्यालय को मात्र २००)रु० ही भेजने थे।

इस योजना के अन्तर्गत सदस्यों का सुझाव और उत्साह प्राप्त हुआ है, उसे थोड़े शब्दों में नहीं लिखा जा सकता, हर शिष्य गुरु भक्ति करना चाहता है, और किसी भी शिष्य की श्रद्धा कम नहीं है, क्योंकि हर शिष्य ने संकल्प लिया है कि जो भी कार्य उसे सौंपा जायेगा वह पूर्ण समर्पण भाव से पूरा करेगा।

एक विशेष सुझाव

कई सदस्यों का यह लिखना था कि यह योजना जून से प्रारम्भ की गई है और हमें जनवरी से अंक चाहिए, जिससे कि जिसे भी सदस्य बनाएं उसके पास साल भर का पूरा सेट हो सके, वास्तव में यह सुझाव उपयोगी है अतः इसे क्रियान्वित किया जा रहा है, अब शिष्य किसी भी मास की २५ पत्रिकाएं मंगा सकता है, अन्य नियम वही रहेंगे।

एक विशेष बात यह है कि योजना प्रकाशित होने के बाद पूरे भारतवर्ष से केवल ३१५ शिष्यों द्वारा ही इस योजना में भाग लिया गया, क्या यह उचित है? क्या पूरे भारतवर्ष में ३१५ ही समर्पित शिष्य हैं? क्या अन्य शिष्य इस महत्वपूर्ण कार्य को करना नहीं चाहते अथवा उनके पास गुरु सेवा के लिए समय नहीं है, इन प्रश्नों का उत्तर तो वे स्वयं ही दे सकते हैं।

आने वाले समय में हमें विश्वास है कि अधिक से अधिक शिष्य इस योजना में भाग लेकर 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' ध्वज अपने क्षेत्र में घर-घर फहराने का कार्य सम्पन्न करेंगे। योजना का प्रपत्र एक बार फिर प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रपत्र

गुरु सेवा योजना

मैं पूज्य गुरुदेव का शिष्य हूं, अब मैं मन, वचन और कर्म से पूज्य गुरुदेव से जुड़ा हूं, इस योजना में भाग लेकर गुरु सेवा करना चाहता हूं और संकल्प लेता हूं कि इस कार्य को अपनी पूर्ण श्रद्धा, भक्ति के साथ सम्पन्न करूंगा, पूज्य गुरुदेव की अक्षुण्ण कृपा बनी रहे।

आप मुझे लौटती डाक से ही.................................मास..................... की २५ पत्रिकाएं रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा भेज दें। पार्सल प्राप्ति के २५ दिन के भीतर २००)रु० मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजने का संकल्प लेता हूं।

मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या.........................

मेरा पूरा नाम...

मेरा पूरा पता ....

....

हस्ताक्षर

साधक के साधन

जीवन में कर्म ही प्रधान है, फलतः इस जीवन में गुरु से जो कृपा प्राप्त हो जाती है उसे पूर्ण रूप से चुका देना चाहिए। कृपा से अपनी विकास शक्ति रुक जाती है, पर साधन की प्रारम्भिक अवस्था में कृपा के बिना एक कदम भी आगे बढ़ा नहीं जाता। अतः साधक, शिष्य के नियम यह हैं कि पहले गुरु से कृपा ग्रहण कर बाद में उसे स्वकर्म द्वारा गुरु को चुका दें। गुरु-प्रदत्त कृपा को ऋण के रूप में ग्रहण कर स्वोपार्जित कर्म द्वारा उसे चुका देना चाहिए। तब भविष्य का कर्म-पथ सुप्रशस्त होता है, उसके पहले नहीं। गुरु का प्रधान काम है काल के राज्य से शिष्य का उद्धार करना। यह साधना मार्ग से होता है, योग मार्ग से भी होता है।

—महर्षि श्री अरविन्द

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
महानाम्नी विद्या	६	तीन हरिहर रुद्राक्ष	६०)रु०
		तीन तांत्रोक्त फल	३०)रु०
		महाज्योति नारायण चक्र	१५०)रु०
त्रि-गणेश विधानम्	१३	—	—
१-उच्छिष्ट गणपति प्रयोग	१५	उच्छिष्ट गणपति यन्त्र	१५०)रु०
		,, ,, चित्र	२१)रु०
		अष्ट मातृका	८०)रु०
२-शक्ति विनायक गणपति अनुष्ठान	,,	शक्ति विनायक यन्त्र	१५०(रु०
		शक्ति विनायक शंख	१२०)रु०
३-हरिद्रा गणपति अनुष्ठान	१६	हरिद्रा गणपति	१५०)रु०
		पीठ माला	११०)रु०
वरदान स्वरूप छः यन्त्र	१७	—	—
१-श्री यन्त्र	,,	श्री यन्त्र	२४०)रु०
		कमलगट्टा माला	८०)रु०
२-बगलामुखी यन्त्र	,,	बगलामुखी यन्त्र	२४०)रु०
		हल्दी की माला	१२०)रु०
३-स्वर्णाकर्षण भैरव यन्त्र	१८	स्वर्णाकर्षण भैरव यन्त्र	१८०)रु०
		मूंगा माला	८०)रु०
४-तारा यन्त्र	,,	तारा यन्त्र	१५०)रु०
		स्फटिक माला	११०)रु०
५-वशीकरण यन्त्र	,,	वशीकरण यन्त्र	१८०)रु०
		मूंगा माला	८०)रु०
६-शत्रु स्तम्भन यन्त्र	,,	शत्रु स्तम्भन यन्त्र	१३५)रु०
		मूंगा माला	८०)रु०
छिन्नमस्ता साधना	२१	छिन्नमस्ता यन्त्र	२१०)रु०
		,, चित्र	२०)रु०
		सिद्ध वज्र वैरोचन	६०)रु०
शिवोक्त अष्टोत्तरी लक्ष्मी साधना	२५	शिवोक्त महातत्व महालक्ष्मी महायन्त्र	१८०)रु०
		१०८ शिवोक्त लक्ष्मी चक्र	६०)रु०
		शांकरी माला	१२०)रु०
महाचण्डी दिव्य अनुष्ठान	२६	चण्डी यन्त्र	२१०)रु०
		गणपति चक्र	६०)रु०
		गायत्री चक्र	६०)रु०
नवग्रह उपासना	३३	विघ्नहर नवग्रह यन्त्र	२१०)रु०
गोपाल सुन्दरी साधना प्रयोग	कवर पेज-२	पैकेट	१५०)रु०
सन्तान गोपाल साधना प्रयोग	,, ३	पैकेट	२४०)रु०

कामना पूर्ति की जो सात ढेरियां बनाई गई थीं वह सुपारी तथा तिल, चावल और सरसों सब उसी पीले कपड़े में बांध कर प्रातः सूर्योदय से पहले चौराहे पर आकर रख दें, तथा पीछे मुड़ कर न देखें। इससे शरीर के दोषों का शमन होता है। विधात्रा तन्त्र पात्र तथा आनन्द भैरव चक्र अपने घर में ही अलग-अलग स्थानों पर रख दें अथवा अपनी सन्दूक में रखें। कामना पूर्ति का यह कृष्ण आकर्षण-वशीकरण प्रयोग साधक को शीघ्र फल देने वाला है।

२-सन्तान गोपाल तन्त्र

सन्तान श्रेष्ठ हो, सन्तान उन्नति करे, सन्तान आज्ञाकारी हो और अपने माता-पिता का नाम आगे बढ़ाये, यह हर मां-बाप की इच्छा रहती है और इसके लिए सन्तान गोपाल प्रयोग से श्रेष्ठ कोई अन्य प्रयोग नहीं है।

यह प्रयोग ही जन्माष्टमी के दिन अर्द्ध रात्रि के पश्चात् किया जाता है। तथा इसमें साधक अपने सामने कृष्ण का बाल चित्र तथा मूर्ति स्थापित करें। इस साधना में मुख्यतः **सिद्ध सन्तान गोपाल यन्त्र** की आवश्यकता रहती है जो कि मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना आवश्यक है।

बृहद गौतमीय तन्त्र के अनुसार जिस घर में सन्तान गोपाल यन्त्र स्थापित होता है उस घर में बालकों की रक्षा कृष्ण स्वयं अपनी शक्तियों के साथ करते हैं।

अर्द्ध रात्रि के पश्चात् साधक सर्वप्रथम कृष्ण चित्र का पूजन करें और इन पूजन में कृष्ण चित्र के मस्तक पर तिलक करें तथा सामने पीले वस्त्र पर मध्य में पुष्प का आसन देकर ताम्र पत्र पर अंकित 'सन्तान गोपाल यन्त्र' स्थापित करें। यन्त्र के चारों ओर चार दिशाओं में 'कृष्ण शक्ति चक्र' स्थापित करें, ये चार शक्ति चक्र वासुदेव, बलभद्र, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध के प्रतीक स्वरूप हैं तथा सामने चार कोनों में कृष्ण की चार मूल शक्तियां— रुक्मिणी, सत्यभामा, लक्ष्मणा तथा जाम्बवती की स्थापना कर इनका पूजन करें। इन पर कुंकुम, केसर, पुष्प, चन्दन अर्पित कर प्रत्येक के आगे प्रसाद रखें तत्पश्चात् यन्त्र का सभी पूजन सामग्री से पूजन करें।

यन्त्र यदि किसी पात्र में रखा गया है तो पहले यन्त्र को शुद्ध जल से धोकर उसे स्थापित करें और उस पर चन्दन का लेप करें। मौली, चन्दन, चावल, सुपारी अर्पित कर प्रसाद स्वरूप खीर का कटोरा सामने रखें। अब साधक, साधिका अथवा पति-पत्नी दोनों सामने स्थापित कृष्ण चित्र को देखते हुए निम्न मन्त्र की पांच माला फेरें—

॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय श्रीं श्रीं श्रीं ॥

जब पांच माला मन्त्र जप पूरा हो जाय तो साधक कृष्ण की आरती सम्पन्न करें और आरती के समय अपने संकल्प की पूर्ति की प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए।

जिन दम्पतियों को सन्तान नहीं है वे पति-पत्नी खीर का प्रसाद स्वयं ग्रहण करें और जिन दम्पतियों के सन्तान हैं और उनकी उन्नति आदि के लिए यह साधना कर रहे हैं तो वे यह खीर का प्रसाद अपने बच्चों को खिला दें।

नित्य प्रति सन्तान गोपाल मन्त्र की एक माला का जप अवश्य करें इससे एक महीने के भीतर-भीतर प्रभाव देखने को मिल जाता है, सन्तान श्रेष्ठता के लिए इससे सुन्दर और सरल उपाय कोई नहीं है। कृष्ण तो अपने भक्तों के लिए ही बने हैं जो श्रद्धा पूर्वक उनकी भक्ति करता है, उसकी कामना श्रीकृष्ण अवश्य ही पूरी करते हैं। ●

रजि० नं० : ३५३०५/८१
पोस्टल एल०आर०जे० : ३६६७/८६-८७

"यह पृथ्वी पर स्वर्ग ही है"

यह अनुभूति व्यक्त की गई एक शिष्य द्वारा जिसने भाग लिया था गुरु पूर्णिमा महोत्सव बम्बई में

(दिनांक १३-१४ जुलाई १९९२ को)

इस बार आयोजन हर दृष्टि से अनूठा, प्रेम-रस से ओत-प्रोत गुरु-भक्ति से सराबोर श्रद्धा, भक्ति, ज्ञान के अमृत से सींचा गया था शिष्यों द्वारा और शिष्यों के सम्मुख विराजमान थे — परम प्रभु **श्री निखिलेश्वरानन्द जी महाराज** हमारे अपने प्रिय सद्गुरुदेव। निहाल हो गये भक्त, साधक, शिष्य और इस पूरे आनन्दमय वातावरण को कैमरों द्वारा कैद कर लिया गया हमारे कैमरा टीम द्वारा।

इस प्रकार बनी है यह महत्वपूर्ण कैसेट जिसे देख कर महोत्सव में भाग लेने वाले शिविर की यादों में खो जाएंगे और शिविर में न पहुंचने वाले उस पूर्णता भरे, अमृत घट छलकते वातावरण को धीर-गम्भीर वाणी को सीधे अपने हृदय में उतरता महसूस करेंगे, उन्हें ऐसा लगेगा कि वे स्वयं वहां थे, और पूज्य गुरुदेव के अमृत प्रवचन केवल उन्हीं के लिए है।

खुशखबरी है कि वीडियो और ऑडियो दोनों कैसेटें बन कर तैयार हो गई हैं, बस आपको भेजने भर की तैयारी है, जो शिष्य बम्बई में ही इसका आर्डर लिखवा चुके हैं उन्हें कैसेटें भेजी जा रही हैं।

शीघ्र कैसेट प्राप्त करने हेतु पत्र लिखें, फोन करें, कहीं ऐसा न हो, कि इस स्वर्गिक दृश्यावलोकन से आप वंचित रह जांय।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव १९९२ वीडियो कैसेट मूल्य—२०१)रु० प्रति कैसेट।

" " " ऑडियो कैसेट (५ भाग) मूल्य— २४)रु० "

यह पांच कैसेट का पूरा सेट—११०)रु० मात्र (केवल पत्रिका सदस्यों के लिए)।

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज०)